हिन्दी प्रचार समाचार

स्थापना : 1918

सभा के संस्थापक : महात्मा गांधी

वर्ष : 87, अंक : 6
जून 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
एक प्रति का मूल्य : ₹ 8/-

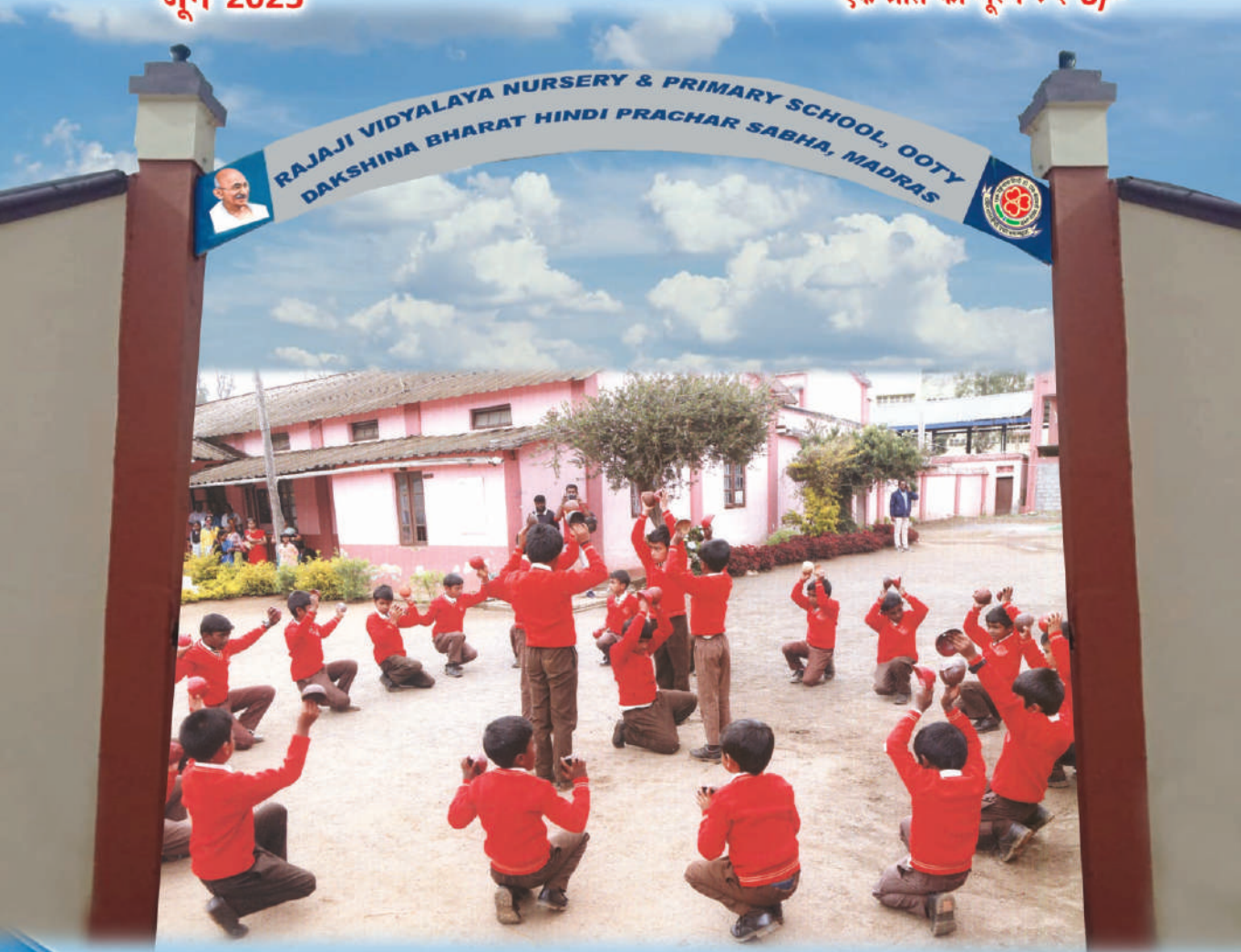

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, ऊटी

राजाजी विद्यालय नर्सरी और प्राइमरी स्कूल : वार्षिकोत्सव - 26.04.2023

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास – विदाई समारोह : मई 2023

श्री वी. षण्मुखसुंदरम, व्यवस्थापक, परीक्षा विभाग एवं श्रीमती आर. भारती, ग्रन्थपाल, एन.एच.आर.एल.

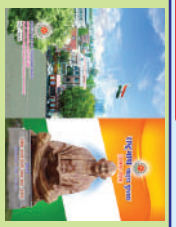

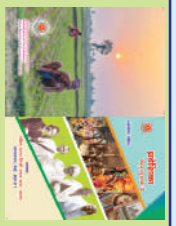

June, 2023. Regd. No. TN/CH(C)/321/2021-2023 **REGISTERED NEWSPAPER**
Licenced to Post without Pre-payment No.TN/PMG(CCR)WPP–432/2021-2023
Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/1957
Date of Publication – First week of every month
Posted at Patrika Channel on Dt.10th June, 2023

Hindi Prachar Samachar

To

If not delivered, please return to:
Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,
15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 की तरफ़ से जी. सेल्वराजन द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित
15-21, तणिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : जी. सेल्वराजन
Published and Printed by G. Selvarajan on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017.
Published and Printed at 15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor G.Selvarajan.

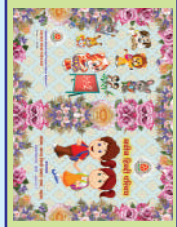

हिन्दी प्रचार समाचार

(राष्ट्रीय महत्व की संस्था, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख पत्र)

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

(संसदीय अधिनियम 14 सन् 1964 द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था)

वर्ष : 87 अंक : 6 | **जून 2023**

संपादकीय

✦ दिनकर का भाषा चिंतन — 4

धरोहर

✦ शब्द और शब्द — विष्णु प्रभाकर — 16

आलेख

✦ देवनागरी लिपि — डॉ. मीना कुमारी सिंह — 6

✦ नैतिकता और विश्वसनीयता की... — आर. सुंदरराजन — 13

कविता

✦ जीवन का सच्चा धन — डॉ. दिलीप धींग — 17

✦ क्षणिकाएँ — डॉ. जयसिंह अलवरी — 18

✦ विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष — 19

कोश

✦ भाषाविज्ञान परिभाषा कोश — 10

लघुकथा

✦ पहचान — डॉ. सुपर्णा मुखर्जी — 26

भाषा शिक्षण

✦ का, के, की का प्रयोग — डॉ. बी. संतोषी कुमारी — 27

पुस्तक समीक्षा

✦ रंगों का प्रिज्म : 'शब्दों के पुल' — डॉ. वासुदेवन शेष — 15

विविधा

✦ फास्टफूड का जीवन पर फास्ट... — डॉ. अमित कुमार दीक्षित — 12

साक्षात्कार

✦ नए प्रतिमान स्थापित करने... — सुमन युगल — 21

परीक्षोपयोगी

✦ विराम चिह्न — 9

✦ कारक — वुल्लि श्रीसाहिती — 29

✦ संज्ञा — 30

✦ पाठ्य पुस्तक सूची — 36

बूझो तो जानो — 31

गतिविधियाँ — 32

संपादक

जी. सेल्वराजन

सह संपादक

डॉ. जी. नीरजा

neerajagurramkonda@gmail.com

प्रमाणित प्रचारक चंदा

₹ : 100/-

संपादकीय कार्यालय

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

टी. नगर, चेन्नै - 600 017

संपर्क सूत्र : 044 - 24341824

044 - 24348640

Website : dbhpscentral.org

You Tube Channel :

DBHPS, Central Sabha Chennai

Email : dbhpssahithyach17@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।

संपादकीय ...

दिनकर का भाषा चिंतन

धर्म, स्नेह दोनों प्यारे थे
बड़ा कठिन निर्णय था
अतः, एक को देह दूसरे
को दे दिया हृदय था

धर्म पराजित हुआ स्नेह का
डंका बजा, विजय का
मिली देह भी उसे, दान था
जिसको मिला हृदय का

- (रामधारी सिंह 'दिनकर', कुरुक्षेत्र)

रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सितंबर, 1908-24 अप्रैल, 1974) ने 'कुरुक्षेत्र' के भीष्म के व्यक्तित्व को उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से जिस प्रकार अभिव्यक्त किया है, ये पंक्तियाँ उनके व्यक्तित्व पर भी लागू होती हैं। उन्होंने 'बारदोली-विजय संदेश', 'प्रणभंग', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रश्मिरथी', 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी', 'संस्कृति के चार अध्याय' आदि अनेक कालजयी कृतियों के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने देश निर्माण तथा स्वतंत्रता संघर्ष में अपने आपको समर्पित कर दिया था। उन्होंने राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा को सशक्त किया, हिंदी कविता को सामाजिक सरोकारों से जोड़ा। उनके संबंध में रामवृक्ष बेनीपुरी की मान्यता है कि 'दिनकर इंद्रधनुष है जिस पर अंगारे खेलते हैं। वस्तुतः इंद्रधनुष और अंगारों का सहज समन्वय ही उनके व्यक्तित्व और उनकी काव्य संवेदनाओं की विशेषता है।' (उद्धृत : डॉ. यतींद्र तिवारी, राष्ट्रकवि दिनकर, पृ.10)।

दिनकर संस्कृति और भाषा के सजग प्रहरी हैं। उनके अनुसार रोटी के बाद मनुष्य की सबसे बड़ी कीमती चीज संस्कृति है। (वही, पृ. 3)। वे सांस्कृतिक गुलामी को सबसे भयानक चीज मानते हैं। 'कोई जाति अपनी भाषा को छोड़कर दूसरों की भाषा को अपना लेती है और उसी में तुतलाने को अपना परम गौरव मानने लगती है। यह गुलामी की पराकाष्ठा है, क्योंकि जो जाति अपनी भाषा में नहीं सोचती, अपनी भाषा में अपना साहित्य नहीं लिखती, अपनी भाषा में अपना दैनिक कार्य संपादित नहीं करती, वह अपनी परंपरा से छूट जाती है, अपने व्यक्तित्व को खो बैठती है और उसके स्वाभिमान का प्रचंड विनाश हो जाता है।' (वही, पृ. 4)।

राष्ट्रीयता दिनकर के साहित्य का मूल स्वर है। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के विविध रंगों को देखा जा सकता है। वे हिंदी को सार्वदेशिक संबंधों की भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। किसी भी व्यक्ति, समाज व समुदाय की पहचान वस्तुतः भाषा से ही होती है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक विरासत एवं भाषा से जुड़ी होती है। राष्ट्रभाषा के संबंध में दिनकर की मान्यता है कि 'राष्ट्रभाषा के आंदोलन को हमें सभी भाषाओं के आंदोलन के साथ-साथ आगे ले चलना है। राष्ट्रभाषा की किस्मत मातृभाषाओं की किस्मत से एक साथ बँधी हुई है, इस तथ्य को देश जितना शीघ्र समझ ले, हमारा भाषा-विषयक विवाद उतना ही शीघ्र शांत हो जाएगा।' (दिनकर, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, पृ. 23)। राष्ट्रभाषा हिंदी ने किसी क्षेत्रीय भाषा का कोई अहित नहीं किया है। लेकिन अंग्रेजी मानसिकता से युक्त

लोगों की यह मान्यता है कि अंग्रेजी छूटी तो सारे संसार से हम छूट जाएँगे। इतना ही नहीं, यदि 'अंग्रेजी छूटी तो हमारा शैक्षिक एवं सांस्कृतिक स्तर अचानक पतन के गर्त में चला जाएगा।' (वही, पृ. 6)। दिनकर डंके की चोट कहते हैं कि 'अंग्रेजी जितनी भी विकसित भाषा हो, वह हमारी संस्कृति को उसी खूबी से अभिव्यक्त नहीं कर सकती, जिस खूबी से वह उन लोगों की संस्कृति को अभिव्यक्त करती है, जो उसे अपनी मातृभाषा मानते हैं।' (वही,पृ. 8)।

दिनकर राष्ट्र की अवधारणा को संस्कृति से जोड़कर ही देखते हैं-

मानचित्र में जो मिलता है
नहीं देश भारत है
भू पर नहीं, मनों में ही
बस कहीं शेष भारत है।

भारत एक भाव जिसको
पा कर मनुष्य जगता है
भारत एक जलज जिस पर
जल का न दाग लगता है

भारत नहीं स्थान का वाचक
गुण-विशेष नर का है
एक देश का नहीं शील
यह भूमंडल भर का है

दिनकर के अनुसार विचारों की एकता सबसे बड़ी एकता है। 'भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अंत में जाकर एक ही साबित होते हैं।' (दिनकर, हमारी सांस्कृतिक एकता, पृ. 7)। दिनकर हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर हैं। 1966 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की रजत जयंती का आयोजन हुआ। उस आयोजन में दीक्षांत भाषण देते हुए दिनकर ने कहा कि 'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा हो, स्वप्न उतना ही पुराना है जितना पुराना यह विचार कि भारत को एक राष्ट्र होना चाहिए। राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र की कल्पना असंभव है। इसलिए जिन नेताओं के दिमाग में यह बात आई थी कि सारा भारतदेश एक राष्ट्र बनेगा, उन्हीं के मन में यह बात भी उठी थी कि इस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा हिंदी होगी। 'हिंदी का प्रचार हमें अंतर-प्रांतीय भाषा के रूप में करना चाहिए जिससे एक समय वह संपूर्ण राष्ट्र की भाषा बन जाए।' दिनकर की स्पष्ट मान्यता है कि राष्ट्रभाषा के अभाव में राष्ट्र की कल्पना करना असंभव है। हिंदी ही राष्ट्र की भाषा हो सकती है और इसका प्रचार अंतर-प्रांतीय भाषा के रूप में करना चाहिए।

देश अनेक स्तरों पर विभाजित हो चुका है। जाति, वर्ग, वर्ण, नस्ल और यहाँ तक कि भाषा के स्तर पर भी देश टुकड़ों में बँट चुका है। देश राष्ट्रभाषा-राजभाषा आदि विवादों में फँसा हुआ है। यह विवाद सदियों से चला आ रहा है। इसके संबंध में दिनकर का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'अपनी मातृभाषा की सेवा करना हममें से प्रत्येक का जन्मजात अधिकार है, किंतु हिंदी का जो राजभाषा या राष्ट्रभाषा वाला रूप है, उसका नेतृत्व करना यदि हम हिंदी वाले छोड़ दें, तो इससे देश की एकता की अधिक सेवा होने वाली है।' स्पष्ट है कि वे चाहते थे कि एक अक्षेत्रीय और सार्वदेशिक राष्ट्र/राज भाषा के रूप में हिंदी का नेतृत्व कथित हिंदीतर भाषियों को करने दिया जाना चाहिए, क्योंकि इसी से हिंदी सर्वस्वीकार्य बन सकेगी।

(सह संपादक)

देवनागरी लिपि

- डॉ. मीना कुमारी सिंह

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा की अभिव्यक्ति दो प्रकार से की जाती है- कथित भाषा के रूप में या लिखित भाषा के रूप में। लिखित भाषा के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। लिपि का अर्थ है किसी भी भाषा को लिखने का ढंग अथवा तरीका। भाषा को लिखने के लिए जिन ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि चिह्न कहते हैं। अर्थात भाषा के ध्वनि-चिह्न ही लिपि है।

भारत वर्ष के संदर्भ में देखा जाए तो वैदिक काल में भारतीयों को लिपि का ज्ञान नहीं था। वेद अध्ययन की परंपरा श्रुतिमूलक ही रही है। विद्यार्थी ऋषियों, मुनियों, गुरुवृन्द के मुख से उच्चरित वेदों तथा ऋचाओं का अध्ययन एवं मनन करते थे। इसी कारण वेद को श्रुति भी कहा गया है। कालांतर में भारतवर्ष में ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ, जो प्राचीनतम लिपि मानी जाती है। कहा जाता है कि जैन तीर्थंकर ऋषभदेव (प्रथम) की बेटी ब्राह्मी ने इस लिपि की खोज की। ऋषभदेव की दो बेटियाँ थीं- ब्राह्मी और सुंदरी। उन्होंने ब्राह्मी को लिपि और सुंदरी को अंक कहा था। दक्षिण भारत के केरल राज्य के एरणाकुलम जिले में इस लिपि का प्रचलन नव पाषाण युग में था। खुदाई से इस तथ्य के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इसी ब्राह्मी लिपि से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ है।

प्राचीन भारत में ई.पू. चौथी और पाँचवी सदी में दो लिपियों का प्रचलन मिलता है, वे हैं- ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि। खरोष्ठी लिपि भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में प्रयुक्त होती थी। सम्राट अशोक ने शाहवाजगढ़ी तथा मनसेहरा में (जो अब पाक्स्तिान में है) अभिलेख खरोष्ठी लिपि में ही लिखवाए थे। खरोष्ठी लिपि का संबंध समेटिक अरमाइक लिपि से है। यह लिपि दाई से बाई की ओर लिखी जाती है। खरोष्ठी लिपि में 37 वर्ण हैं। इसमें संयुक्ताक्षर और मात्राएँ नहीं हैं। कहा जाता है कि इस लिपि के निर्माता खरोष्ठ नामक विद्वान थे। इसलिए इसका नाम खरोष्ठी पड़ा। कुछ लोगों का मानना है कि गधे की ओष्ठ के समान अक्षर होने के कारण इसे खरोष्ठी लिपि कहते हैं। 'स्वर' मतलब गधा, ओष्ठी का अर्थ है ओष्ठवाली (स्वर + ओष्ठी) अर्थात् इसके अक्षर गधे के ओंठ के समान मोटे-मोटे थे। कुछ लोगों का मानना है कि गधे की खाल पर लिखे जाने के कारण इसका नाम खरोष्ठी लिपि पड़ा। जो भी हो खरोष्ठी लिपि अधिक समय तक टिक न सकी। कालांतर में यह लुप्त हो गई।

ब्राह्मी लिपि उत्तर से दक्षिण भारत तक फैली हुई थी। सम्राट अशोक के शासनकाल में इसे राष्ट्र-लिपि का दर्जा प्राप्त था। सम्राट अशोक ने इसे 'धम्म लिपि' का नाम दिया था। अशोककालीन शिलालेखों और अभिलेखों में ब्राह्मी लिपि का ही प्रयोग किया गया है। इसका समय ई.पू. 500 से लेकर ई.पू. 350 तक माना जाता है। ब्राह्मी लिपि ईसा के प्रथम शताब्दी में कुषाण लिपि और चौथी-पाँचवी सदी में गुप्त लिपि के रूप में विकसित हुई। गुप्त साम्राज्य में यह लिपि बंगाल से कश्मीर तक नेपाल से दक्षिण तक फैली

थी। गुप्त साम्राज्य में प्रचलन के कारण इसका नाम 'गुप्त लिपि' पड़ा। गुप्त लिपि का विकसित रूप ही 'कुटिल लिपि' है। टेढ़े-मेढे अक्षरों के कारण इसका नाम कुटिल लिपि पड़ा। छठवीं सदी से यह लिपि प्रचलन में आ गई। बोधगया के शिलालेखों (588 ई.) में कुटिल लिपि के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

शनैः-शनैः कुटिल लिपि से दो लिपियों का विकास हुआ- नागरी लिपि और शारदा लिपि। शारदा लिपि का प्रयोग कश्मीरी, डोगरी, गुरुमुखी आदि भाषाओं के लेखन में किया जाता है। नागरी लिपि का प्रयोग बंगला, मैथिली, गुजराती, उड़िया, नेपाली आदि भाषाओं के लेखन में किया जाता है। इसका नाम नागरी क्यों पड़ा? इस पर विद्वानों के विचारों में मतभेद पाया जाता है। कुछ विचारकों का मानना है कि गुजरात के नागर ब्राह्मणों में प्रचलित होने के कारण यह नागरी लिपि कहलाई। कुछ लोग मानते हैं कि नगरों में प्रचलित होने के कारण यह नागरी लिपि कहलाई। कुछ का मानना है कि मंत्र-तंत्र में प्रयुक्त होने के कारण नागरी लिपि का नामकरण हुआ। एक अन्य मत के अनुसार नागवंशी द्वारा प्रयुक्त होने के कारण नागरी लिपि का नाम पड़ा।

कालांतर में नागरी लिपि की दो शाखाएँ विकसित हुईं - उत्तरी शाखा और दक्षिणी शाखा। नागरी लिपि की दक्षिणी शाखा से नंदि नागरी का विकास हुआ। नंदि नगर में विकसित होने के कारण इसका नाम नंदि नागरी पड़ा। नंदि नागरी से ही ग्रंथ लिपि का विकास हुआ। तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि दक्षिण की भाषाएँ इसी लिपि में लिखी जाती हैं।

देवनागरी लिपि का विकास नागरी लिपि की उत्तरी शाखा से हुआ। डॉ. उदय नारायण तिवारी का विचार है कि इस लिपि का प्रयोग देवभाषा संस्कृत को लिखने में हुआ था, इसलिए इसका नाम देवनागरी पड़ा। सातवीं सदी के पश्चात् इस लिपि का विकास हुआ। कोंकण के सिलहट शासक ने 834 ई. एवं 851 ई. में देवनागरी लिपि का प्रयोग शिलालेखों में करवाया। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि प्रांतों के शिलालेखों, ताम्रपत्रों, हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथों में देवनागरी लिपि का अधिक प्रयोग हुआ है।

देवनागरी लिपि को कुछ लोग लोक-लिपि, हिंदी-लिपि आदि नामों से भी जानते हैं। यह लिपि बाई से दाहिनी ओर लिखी जाती है। इसमें शिरोरेखा और मात्राओं का प्रयोग किया जाता है। 11 स्वरों और 33 व्यंजनों से इसकी वर्णमाला बनी है। संयुक्ताक्षर का प्रयोग भी देवनागरी लिपि में किया जाता है। इसका प्रयोग हिंदी, प्राकृत, अपभ्रंश, नेपाली, मैथिली, गुजराती, उड़िया, बंगला, मराठी आदि भाषाओं को लिखने में किया जाता है। आजकल देवनागरी लिपि की जो वर्णमाला प्रचलित है वह 11 वीं सदी से स्थिर हो गई। 15 वीं सदी तक उसमें सौंदर्यात्मक स्वरूप का भी समावेश हो गया।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता : देवनागरी लिपि अपनी विशेषताओं के कारण वैज्ञानिक मानी जाती है। विश्व में प्रचलित सभी लिपियों में इसे अधिक वैज्ञानिक मानी जाती है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वह जैसी लिखी जाती है, वैसी ही पढ़ी जाती है। देवनागरी लिपि में

निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं-

अक्षरात्मकता : ध्वनिमूलक लिपि के दो भेद किए गए हैं- अक्षरात्मक एवं वर्णनात्मक। अक्षरात्मक लिपि वह है, जिसमें स्वर एवं व्यंजन दोनों की व्यवस्था होती है। उदाहरण के तौर पर क = क् + अ। देवनागरी लिपि को अक्षरात्मक लिपि मानी जाती है। इसमें स्वर तथा व्यंजन के मेल से ही अक्षरों का निर्माण होता है। जैसे- रमेश = र् + अ + म् + ए + श् + अ। अक्षरात्मक लिपि व्यवस्था के कारण उच्चारण में सुविधा होती है। रोमन लिपि वर्णनात्मक होने के कारण स्वर के साथ व्यंजन का संयोग नहीं होता। अंग्रेजी वर्णमाला के कुछ अक्षर a, e, i, o, u के द्वारा स्वर का काम चलाया जाता है। जैसे- Ramesh = R + a + m + e + s + h

दूसरी बात यह है कि देवनागरी लिपि में सभी अक्षरों की बनावट एक जैसी ही होती है। कोई अक्षर छोटा या बड़ा नहीं होता है। इसमें लेखन-कार्य आसानी से किया जा सकता है। परंतु रोमन लिपि में चार प्रकार के अक्षरों की बनावट मिलती है। मुद्रण एवं लेखन में Capital 'A' एवं Small 'a' को अलग-अलग ढंग से लिखने का प्रावधान है। इससे अक्षरों की बनावट को सीखने और लिखने में भ्रम पैदा होता है।

समानता : देवनागरी लिपि में कोई अक्षर शब्द के पहले हो या बाद में अथवा अंत में, उसका उच्चारण समान होता है। जैसे : मन, कमजोर, काम। इससे देवनागरी लिपि को पढ़ने में कोई दुविधा नहीं होती है। रोमन लिपि में ऐसा नहीं पाया जाता है। शब्द के अनुसार अक्षर के उच्चारण में अंतर दिखाई पड़ता है। जैसेः- Put- इस शब्द में 'U' का उच्चारण 'उ' के रूप में होता है। But- इस शब्द में 'U' का उच्चारण 'अ' के रूप में होता है।

निश्चितता : देवनागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही अक्षर/वर्ण निश्चित है। प्रत्येक शब्द में उसका प्रयोग एक निश्चित ध्वनि के लिए ही किया जाता है, जो पठन-पाठन में सुविधाजनक होती है। जैसे- कमला, कलश, कबूतर। रोमन लिपि में एक ध्वनि के लिए कई अक्षरों का उपयोग किया जाता है। जैसे- 'क' ध्वनि के लिए K. C. Q. का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, King, Cake, Queen. इस वजह से रोमन लिपि को पढ़ने में कठिनाई महसूस होती है।

ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर व्यवस्था : ह्रस्व एवं दीर्घ स्वरों की व्यवस्था देवनागरी लिपि में पाई जाती है, जिससे उसे स्पष्ट रूप से पढ़ा एवं लिखा जा सकता है। जैसे- कल, कला, काला, काल आदि विभिन्न अर्थों वाले शब्दों को आसानी से पढ़कर उनके अर्थ-भेद को समझ सकते हैं। रोमन लिपि में ह्रस्व-दीर्घ स्वरों की व्यवस्था न होने के कारण 'Jala' को जल, जला, जाल, जाला कुछ भी पढ़ सकते हैं।

महाप्राण एवं अनुनासिक वर्णों की व्यवस्था : देवनागरी लिपि में महाप्राण और अनुनासिक ध्वनियों के लिए भी वर्ण पाए जाते हैं। इसी कारण हिंदी की वर्णमाला बड़ी हो गई है। परंतु इससे अर्थ-ग्रहण एवं उच्चारण में सुविधा होती है। जैसे : खाना और गाना के अंतर को आसानी से समझा जा सकता है। रोमन लिपि में महाप्राण के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए हिंदी के महाप्राण वर्णों को लिखते समय 'H' का प्रयोग किया जाता है। जैसे - ख - Kh, छ - Chh, ठ - Th, ध - Dh, फ - Ph...

उच्चारण में शुद्धता के लिए देवनागरी लिपि में अनुनासिक के लिए नुक्ता (·), अनुस्वार के लिए चंद्रबिंदु (ँ), विसर्ग (:) आदि का प्रावधान है। जैसे : चंदा, चाँद, प्रातः। रोमन लिपि में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। रोमन लिपि में उच्चारण में इतनी दिक्कत आती है कि कुछ लोग अंग्रेजी पढ़ना कठिन मानते हैं क्योंकि यह जैसे लिखी जाती है, वैसे पढ़ी नहीं जाती। कभी-कभी तो कुछ वर्ण उच्चारण के समय लुप्त (silence) हो जाते हैं। जैसे- Know, Knife में 'K' तथा Psychology में 'P' के उच्चारण को साइलेंट माना जाता है।

शिरोरेखा : वर्तमान देवनागरी लिपि शिरोबद्ध होने से एक शब्द के वाचन में सुविधा होती है। दो शब्दों से बने एक शब्द तथा सामासिक पद के उच्चारण में आसानी होती है। जैसे : समाचार-पत्र, पुस्तकालय गंगाधर, नवरात्रि आदि।

लचीलापन : देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह लचीली है, समय के साथ-साथ परिवर्तन के लिए तैयार है। उर्दू शब्दों के सही उच्चारण के लिए नीचे नुक्ता (·) लगाने तथा अंग्रेजी शब्दों के लिए चंद्राकार (ॅ) को आत्मसात कर चुकी है। जैसे : उर्दू शब्दः ज़मीन, मेज़, फ़र्श, फ़र्ज। अंग्रेजी शब्दः कॉलेज, डॉक्टर।

देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि है। उसकी विशेषताओं के कारण ही वैज्ञानिक है। भारतीय संविधान द्वारा देवनागरी लिपि को ही स्वीकृति प्रदान की गई है। देश-विदेश में सभी भारतीय इस लिपि का प्रयोग कर रहे हैं। देवनागरी लिपि दिन-प्रतिदिन विश्व-मंच पर लोकप्रिय बनती जा रही है।

73/31, Kumara Koil Middle Street, Kallidai Kurichi, Tirunelveli - 627416 (TN)

परीक्षोपयोगी

विराम चिह्न

शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने तथा किसी विषय को भिन्न-भिन्न भागों में बाँटने और पढ़ने में ठहरने के लिए, लेखों में जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं। कुछ मुख्य विराम चिह्न इस प्रकार हैं-

अल्प विराम (,),
अर्ध विराम (;),
पूर्ण विराम (।),
प्रश्न चिह्न (?),
आश्चर्य चिह्न (!),
अवतरण चिह्न (' '),
कोष्ठक ()

भाषाविज्ञान परिभाषा कोश

अंतरण :

Transference : इस शब्द का प्रयोग अनुवाद के क्षेत्र में होता है। नाइडा ने अपने अनुवाद सिद्धांत में मूलभाषा पाठ के विश्लेषण तथा लक्ष्यभाषा पाठ के पुनर्गठन के बीच की प्रक्रिया को अंतरण की संज्ञा दी। अंतरण की प्रक्रिया अनुवादक के मस्तिष्क में घटित होती है। विश्लेषण एवं पुनर्गठन के सोपान पर अनुवादक अन्य व्यक्तियों से सहायता ले सकता है किंतु अंतरण के सोपान पर उसे अकेले कार्य करना पड़ता है।

अंतःभाषिक :

Interlingual : एक भाषा के पाठ का किसी दूसरी भाषा में अन्वयांतरण अथवा अंतःभाषिक अनुवाद कहलाता है। इस प्रकार यह एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में अंतरण है। हिंदी में रचित कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद इसका उदाहरण कहा जा सकता है।

अनुवाद :

Translation : इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुनःकथन। एक बार कही हुई बात को फिर से कहना अथवा दोहराना। एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है।

अनुवादक :

Translator: अनुवाद कार्य करनेवाला व्यक्ति अनुवादक कहलाता है। एक सफल अनुवादक के तीन अनिवार्य गुण हैं- स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान तथा विषय का समुचित ज्ञान।

आंतरभाषिक :

Intralingual : किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ का उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था द्वारा अंतरण आंतरभाषिक अनुवाद कहलाता है। उदाहरण के लिए हिंदी के महाकाव्य का उसी भाषा में गद्य रूप में प्रस्तुत करना।

आगत अनुवाद :

Loan Translation : एक विशेष प्रकार का आदान जिसमें आगत शब्द या पदबंध के रूपिमिक घटकों को नवीन भाषा के समतुल्य रूपिमों में एक-एक कर अनूदित किया जाता है। यथा- अंग्रेजी शब्द Economic Investigation हिंदी में आर्थिक अन्वेषण है।

आवृत्तिः

Frequency : सामान्यतः किसी भी स्वन, शब्द या रूप आदि को एक से अधिक बार प्रयोग आवृत्ति कहलाता है। भौतिक स्वनविज्ञान में आवर्त गति में एक सेकंड में पूरे होने वाले पूर्ण

आवर्तनों या चक्रों की संख्या आवृत्ति कहलाती है।

क्रियोल :

Creole : दो संस्कृतियों का संपर्क भाषा के मिश्रित रूप को जन्म देता है। ऐसी मिश्रित भाषा जिसमें स्थानीय भाषा की ध्वनियाँ एवं व्याकरण तथा बाह्य भाषा का शब्द समूह पिजिन कहलाती है। जब पिजिन किसी भाषिक समुदाय की मातृभाषा के रूप में कार्य करने लगे तो उसे क्रियोल की संज्ञा दी जाती है।

कोड :

Code : किसी एक संकेत व्यवस्था को दूसरी संकेत व्यवस्था में रूपांतरित करने के लिए प्रयोग किया गया रूढ़ि समुच्चय कोड कहलाता है। भाषा व्यवहार करते समय जब वक्ता किसी एक भाषा के वाक्यों में दूसरी भाषा के तत्व मिश्रित कर दे तो उसे कोड मिश्रण कहा जा सकता है।

क्षेत्रीय भाषाविज्ञान :

Areal Linguistics : किसी क्षेत्र विशेष की बोली की भाषिक विशेषताओं का अध्ययन विश्लेषण क्षेत्रीय भाषाविज्ञान का अध्ययन विषय है। क्षेत्र पर बल होने के कारण इसे क्षेत्रीय भाषाविज्ञान कहा जाता है। यह अध्ययन संकालिक एवं द्विकालिक दोनों होता है।

ग्लॉसीम :

Glosseme : ग्लॉसेमैटिक्स संप्रदाय में इस पारिभाषिक शब्द की रचना उन अमूर्त लघुतम अपरिवर्त्य रूपों के लिए की गई जिनकी स्थापना यह सिद्धांत भाषिक विश्लेषण के समस्त क्षेत्रों की व्याख्या के लिए आधार रूप में करता है।

चित्र लिपि :

Pictography : लिपि का वह आद्य रूप जिसमें किसी प्रत्येक वस्तु, उपादान या विचार की अभिव्यक्ति करता है। ये प्रतीक चित्र रूप में होते हैं।

जनभाषा :

Lingua Franca : विविध मातृभाषाभाषी किसी समुदाय के सदस्य रूप में वाक् व्यवहार के लिए जिस बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं, उसे समाज भाषाविज्ञान में जनभाषा का नाम दिया जाता है। भारत के संदर्भ में हिंदी को जनभाषा कहा जा सकता है।

तालिका :

Inventory : भाषा के किसी स्तर या क्षेत्र से संबंधित मदों की अक्रमित सूची तालिका कहलाती है।

(स्रोत : भाषाविज्ञान पारिभाषिक कोश)

फास्टफूड का जीवन पर फास्ट कुप्रभाव

- डॉ. अमित कुमार दीक्षित

फास्टफूड ने जीवनशैली को तो बदल कर ही रख दिया है, मानो आधुनिक जीवनशैली पर फास्टफूड का ही एकाधिकार व कब्जा है। आज के आधुनिक युग में बाजारवाद ने हमारे रहन-सहन और खानपान में काफी बदलाव ला दिया है। पिज्जा, चाउमीन, बर्गर, हॉट डॉग, पेस्ट्री, समोसे, कोल्ड ड्रिंक आदि ढेरों ऐसे खाद्य पदार्थ हैं। इस तरह जंक फूड के बारे में सोचकर ही हमारे मुँह में पानी आ जाता है। आज फास्टफूड जीवनशैली का जितना अभिन्न अंग है उतना ही शरीर के विभिन्न अंगों को भी प्रभावित करता है। फास्टफूड बनाने में फास्ट, खाने में फास्ट, तो शरीर को नुकसान पहुँचाने में उससे भी ज्यादा फास्ट है। फास्टफूड खाने में समय की बचत, स्वाद का मजा, जीवनभर बीमारियों की कैद में रहने की सजा। आज के समाज में लोगों का मन फास्टफूड की तरफ इस कदर ललचा रहा है कि इसके बिना जीवन की कल्पना कर पाना मुश्किल हो रहा है। फास्टफूड ने लोगों की जीवनशैली को इस तरह प्रभावित किया है कि लोग जीवन में फास्ट रहने के अलावा खानपान भी फास्ट मोड में करने लगे हैं। मनुष्य जितनी तेजी से फास्टफूड को जीवन में अपना रहे हैं उतनी ही तेजी से वे जटिल रोगों के गिरफ्त में भी आ रहे हैं।

फास्टफूड ने जीवन के कलेवर को ही बदल कर रख दिया है। फास्टफूड ने फास्ट जीवन जीने की सीख तो दी है पर फास्ट बीमारियों की ओर भी बढ़ने की राह भी दिखाई है। इसने पूर्ण रूप से ही जीवन बदल कर रख दिया है। फास्टफूड ने जीवन को फास्ट से लास्ट की स्थिति में ले जाने में काफी मदद की है। सैंडवीच, ब्रेड, बर्गर आदि ने लोगों के जीवन को तीन कोना, ब्रेड ने चार कोना और जो शेष बचा उसे बर्गर ने गोल करके रख दिया है मानो लोगों के घरों पर अब इन्हीं की कब्जा हो अर्थात अब फास्टफूड के शौकीन लोगों की जीवनशैली इसी परिपाटी के चारों तरफ घूमती रहती है।

भोजन की आदत बदलो तो बीमारियाँ रहेंगी दूर। इसलिए तो कहते हैं दोस्तो! जान है तो जहान है। टेस्ट बदलो, ट्रेंड बदलो, खाने का अंदाज बदलो तभी जीवन रहेगा आबाद और खुशियों की होगी भरमार। स्वस्थ शरीर ही जीवन में सुख की अनुभूति का एहसास करा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फास्टफूड व जंक फूड एक महीने में एक बार ठीक है, पर इसकी आदत बना लेना स्वयं के शरीर को स्वयं नुकसान व बर्बाद करना है। इसलिए घर का स्वच्छ, स्वस्थ भोजन खाएँ और स्वस्थ जीवन व्यतीत करें।

"स्वच्छ, स्वस्थ भोजन से व्यतीत हो बेहतर जीवन"

CEL, CMO, Kolkatta, West Bengal

नैतिकता और विश्वसनीयता की भूमि : 'रश्मिरथी'

- आर. सुंदरराजन

'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत चरित्र प्रधान काव्य है। काव्य के संबंध में भारतीय आचार्यों ने इस प्रकार कहा हैः 'काव्यानंद ब्रह्मानंद सहोदर।' इस प्रकार काव्य का आनंद परब्रह्म की अनुभूति के समान होता है। काव्य के विभिन्न लक्षण भी बताए गए हैं। उनमें से एक है 'प्रकृति-चित्रण'। प्रस्तुत लेख में 'रश्मिरथी' में वर्णित प्राकृतिक सौंदर्य पर विचार करेंगे।

छायावादी दर्शन : कवि दिनकर ने महान दानी कर्ण के जन्म का वर्णन छायावादी दृष्टिकोण से किया है। जैसे : *"वन्य कुसुम-सा खिला कर्ण जग की आँखों से दूर।"*

कीचड़ में कमल का जन्म होता है। दिनकर कहते हैं कि सिर्फ राजाओं के उपवन में ही नहीं अपितु जंगल में भी कुसुम खिलती है। यहाँ इस उपमान-उपमेय योजना से उन्होंने कर्ण के जन्म का चित्रण किया है-

नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज-कानन में
समझे कौन रहस्य? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदडी में रखती चुन-चनकर बड़े कीमती लाल।।

प्रकृति का मानवीकरण : कवि दिनकर कर्ण की वीरता की तुलना सूरज से करते हैं। वास्तव में कर्ण तो सूरज-पुत्र ही है। जैसेः

जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है?
युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है?

मुनिवर परशुराम के आश्रम की सुंदरता का वर्णन दिनकर इस प्रकार करते हैं-

शीतल, विरल एक कानन शोभित अधित्यका के ऊपर,
कहीं उत्स-प्रस्त्रवण चमकेत, झरते, कहीं शुभ्र निर्झर।
जहाँ भूमि समतल, सुन्दर है, नहीं दीखते हैं पाहन,
हरियाली के बीच खड़ा है विस्तृत एक उटज उपवन।

मानव जीवन की छाया : कवि दिनकर प्रकृति में मानव जीवन की छाया देखते हैं। जैसे-

हँसती यें रश्मियाँ रजत से भरकर वारि विमल को
हो उठती थीं, स्वयं स्वर्ण छू कवच और कुंडल को।

किरण-सुधा पी स्वयं मोद में भरकर दमक रहा था,
कदली के चिकने पातों पर पारद चमक रहा था।

कवि को लगता है कि परशुराम द्वारा शपित कर्ण की दयनीय दशा और कवच-कुंडलहीन कर्ण को देखकर प्रकृति भी स्वयं व्याकुल हो उठी हो। जैसे-

चकित भीत चहचहा उठे, कुंजों में विहग बिचारे,
दिशा सन्न रह गयी, यह दृश्य भीति के मारे।

रात का मौन रूप : कर्ण की माता कुंती अर्जुन के प्राणों की भीख माँगने कर्ण के पास आईं। उसकी बातें सुनने के बाद कर्ण ने अपना दुखड़ा कुंती को सुनाया। कर्ण की आँखों से आँसू की धारा बह रही थी। उसकी शोक कथा सुनकर प्रकृति भी स्तब्ध हो गई। उस समय रात भी अपना मौन-रूप लिए स्तब्ध था। जैसे-

अंबर पर मोती गूँथे चिकुर फ़ैलाकर,
अंजन उंडेल सारे जग को नहलाकर,
साड़ी में टाँके हुए अनंत सितारे
थी घूम रही तिमिरांचल निशा पसारे।

माता कुंती कर्ण से मिलने के बाद भारी हृदय से लौटती है, क्योंकि कर्ण का लक्ष्य अर्जुन को युद्ध में मारना था। अर्जुन और कर्ण दोनों ही कुंती के पुत्र ही थे। अब दोनों पुत्रों में से किसी एक को खोना ही पड़ेगा। इसी पुत्र-शोक से कुंती व्याकुल थी। उस दशा का वर्णन कवि दिनकर ने इस प्रकार किया है-

चन्द्रमा-सूर्य तम में जब छिप जाते हैं
किरणों के अन्वेषी जब अकुलोत हैं
तब धूमकेतु, बस, इसी तरह आता है,
रोशनी जरा मरघट में फैलाता है।

भीष्म का गिरना : युद्ध में भीष्म पितामह चोट खाकर गिर पड़ते हैं। उस दृश्य का वर्णन देखिए -

'गिरि का उदग्र गौरवाधार, गिर जाय शृंग जो महा कार,
अथवा सूना कर आसमान ज्यों गिरे टूट रवि भासमान,
कौरव-दल का कर तेज हरण
त्यों गिरे भीष्म आलोकवरण।'

इस प्रकार 'रश्मिरथी' में कविवर दिनकर ने प्रकृति के बहुरूपों को उपमान बनाकर कर्ण का चित्रण किया है। उन्होंने कर्ण को नैतिकता और विश्वसनीयता की भूमि पर खड़ा किया है।

D.No. 3/75, D-7, Lakshmi Nagar, Ist Street, Kaniyur, Coimbatore Dist - 641659 (TN)

रंगों का प्रिज्म : 'शब्दों के पुल'

- डॉ. वासुदेवन शेष

साहित्य की कई विधाएँ हैं जैसे कहानी, उपन्यास, काव्य, नाटक, रिपोर्ताज, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा वृतांत्त इत्यादि। इनके अतिरिक्त मुक्तक, क्षणिकाएँ और हाइकु भी हैं। साहित्य संप्रेषण का माध्यम है और अपनी बात को कम शब्दों में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना ही संप्रेषण है। हाइकु जापान की विधा है। इसमें मात्र तीन पंक्तियाँ ही होती हैं और वर्णक्रम में 17 ही अक्षर होते हैं। सन् 1644 में जापान के कवि बाशो ने ही इसे जापानी भाषा में पहचान और प्रतिष्ठा दिलाई। कालांतर में हिंदी के साहित्यकारों, लेखकों ने भी इस विधा को अपनाया और हाइकु विधा आरंभ हुई और दुनिया की अन्य भाषाओ में यह अति लोकप्रिय और प्रचलित हो गई। विगत कुछ वर्षों में विश्वविद्यालयों में हाइकु पर शोध कार्य भी प्रचुर मात्रा में किए गए। कई साहित्यकारों ने इस विधा से प्रेरित होकर हाइकु पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं। हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में हाइकु लिखा जा रहा है।

डॉ. सारिका मुकेश की पुस्तक 'शब्दों के पुल' हाइकु कविताओं का संग्रह है। प्रो. सारिका अंग्रेजी भाषा की प्रोफेसर हैं लेकिन हिंदी भाषा और साहित्य में अपार रुचि है। इसीका परिणाम है 'शब्दों के पुल'। इसमें कुल 83 हाइकु हैं। सभी हाइकु प्रभावपूर्ण हैं। समाज, राजनीति, धर्म, प्रेम, जीवन, नारी, ईश्वर, प्यार, रामायण, सभी विषयों को अपने इन हाइकुओं में बखूबी समेटा है। प्रभु की वंदना करते हुए 'वंदे चरण' कान्हा कृष्ण का वंदन करती है क्योंकि हमारे आराध्य ही सर्वप्रथम आते हैं और उन्हीं से हमें लिखने की प्रेरणा भी मिलती है। सुबह के सूरज के संबंध में बताती है कि सूर्य हमारे लिए प्रकृति का अनुपम उपहार है।

जीवन में आशा और निराशा दोनों आती ही हैं। रात के बाद दिन होता है और धूप के बाद छाँव भी आती है। उसी प्रकार निराशा के पलों में भी आशा की किरण दिखाई देती है। 'अच्छा व्यक्तित्व' में सारिका लिखती है कि हर किसी को आकर्षित करना अच्छा व्यक्तित्व है जो जीवन की सच्चाई है। आपका चरित्र और व्यक्तित्व ही आपको महान बनाता है और आपको शिखर तक पहुँचाता है।

साहिका मुकेश द्वारा व्यक्त हाइकु भाव और अभिव्यक्ति में सफल हैं। आज के दौर में आदमी ही आदमी को काटता है, उसका तिरस्कार करता है। आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न करता है। 'आकांक्षा' में लिखती हैं कि बच्चा चाँद को छूने की जिद करता था। आज वही स्थिति है- बच्चे अपनी बुद्धिमत्ता से तकनीकी साधनों और शिक्षा से चाँद को छू रहा है। हर व्यक्ति के जीवन में यादों के पल भुलाए नहीं भूलते। अपनी भूली बिसरी यादों के सहारे आदमी जीता है। एक तरफ जहाँ यह खुशी होती है, दूसरी तरफ दुख क्योंकि यादें एक अनमोल खजाना होती हैं। जो इंसान के साथ जुड़ी रहती हैं।

जिस देश में जहाँ एक समय दूध की गंगा बहा करती थी आज वही देश दूध के लिए तरस रहा है। बच्चे दूध के बिना बिलख रहे हैं। दूध के नाम पर मुनाफाखोरों ने देश के साथ और नन्हे जानों के साथ दगा

किया है। यह आज की वर्तमान की तस्वीर है। जो देश कृषि प्रधान कहलाता था आज देश का अन्नदाता कृषक अपनी रोटी के लिए मोहताज हो गया है। आत्महत्या करने लगा है। बिचौलियों ने किसानों की पैदावार के साथ बेइंसाफी की है। किसान त्रस्त है। यह आज की वस्तुस्थिति है। 'जीवन एक पहेली' में लिखती हैं जीवन के रहस्य को कोई नहीं समझ पाया और आखिरकार मौत ही उससे छुटकारा दिलाती है। जीवन में समस्याएँ और उलझनें हर मोड़ पर आती हैं और यह स्वाभाविक भी है। शब्दों को आप छू नहीं सकते परन्तु शब्द आपको छू सकते हैं। शब्द में वह शक्ति है जो तलवार में भी नहीं। शब्द किसी के जीवन में अपार खुशियाँ ला सकते हैं। दूसरी और व्यक्ति को दुख के सागर में डुबा भी सकते हैं। ऐसी बाणी बोलिए मन को शांति दे और आपके दो शब्द आपके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ बयान कर देते हैं।

'शब्दों के पुल' में कवयित्री ने अपने सुस्पष्ट और बेबाक विचारों से रू-ब-रू कराया है। जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि यह बात सारिका ने सिद्ध कर दी है। केवल तीन पंक्तियों में जीवन का निचोड़ है। जीवन के हर पहलू को उन्होंने गहराई से आँक कर हाइकु में बिखेरा है। हर रंग में इंद्रधनुष दिखाई देता है जो आसमान में छाने काली घटाओं को हटाकर उसमें खुशियों के रंग बिखेर देता है। अगर सुधी पाठक इन हाइकुओं के मर्म को जान लें और उसे जीवन में आत्मसात करते हुए आगे बढ़े तो निराशा, दुःख और तनाव से भरे जीवन में इन्द्रधनुष की तरह रंग बिखर जाएँगें और हम खुशियों के सागर में हिंडोले लेने लगेंगे। कहा जा सकता है कि हाइकू संग्रह 'शब्दों के पुल' रंगों का प्रिज्म है।

जीवन पथ के हम पथिक हैं
राहें भली ही अलग-अलग हैं
गंतव्य सभी का एक है

53, Irusappa Street, Triplicane, Chennai - 600005

धरोहर : कविता

शब्द और शब्द

- विष्णु प्रभाकर

समा जाता है
श्वास में श्वास
शेष रहता है
फिर कुछ नहीं
इस अनंत आकाश में
शब्द ब्रह्म ढूँढ़ता है
पर-ब्रह्म को
शब्द में अर्थ नहीं समाता
समाया नहीं
समाएगा नहीं
काम आया है वह सदा
आता है
आता रहेगा
उछालने को
कुछ उपलब्धियाँ
छिछली अधपकी

कविता

जीवन का सच्चा धन

- डॉ. दिलीप धींग

जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।
अच्छे संस्कारों के बिना जीवन बेकार है।।

बड़ों का मान रखें, करें उनका सम्मान।
माता, पिता, गुरु को नित करें प्रणाम।
नहीं करें अवज्ञा, कभी सामने नहीं बोलें,
उनका हमारे जीवन पर बड़ा उपकार हैं।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।

परिवार में प्रेम की बाँसुरी बजाएँ।
विनय अनुशासन से जीवन सजाएँ।
सफलता की राह आसान हो जाती,
जहाँ सत्य, निष्ठा और शिष्टाचार है।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।।

प्रिय, निश्छल और आदर से बोलें हम।
अपनी बोली में सदैव मिश्री घोलें हम।
वाणी की कीमत कभी कम नहीं आँके,
वाणी से पहचाना जाता घर-परिवार है।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।।

मोबाइल का मर्यादित उपयोग करेंगे।
नियम से प्राणायाम और योग करेंगे।
करेंगे संगति साधु की, सज्जन की,
सुसंगति से अच्छा बनता व्यवहार है।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।।

नियमित पढ़ाई और लक्ष्य पर ध्यान करें।
अच्छी परंपराओं का ज्ञान करें, मान करें।
भाव हो अपनों की, दूसरों की मदद का,
आपस में रहें तो खुशियाँ अपार हैं।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।

माता-पिता की सदिच्छा पूरी हो।
फूहड़ गानों से, गप्प से दूरी हो।
व्यसनमुक्त रहने का संकल्प कीजिए,
जीवन सद्‌गुणों का झिलमिल हार है।
जीवन का सच्चा धन अच्छे संस्कार हैं।।

7, Ayya Mudali Street, 1st Floor, Sowcarpet, Chennai - 600 001

नैनों की करि कोठरी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारिके, पिय को लिया रिझाय।।

अर्थ : मैंने अपनी आँखों की कोठरी में पुतली का पलंग बिछाकर और उस कोठरी पर पलकों की चिक डालकर प्रिय (परमात्मा) को प्रसन्न कर लिया है।

कबीर का कहना कि प्रियतम का चित्र नेत्रों में खींच लेने पर ही वह वश में हो सकता है। मेरी आँखों में भगवान सदा बसे रहते हैं- मैंने उन्हें आँखों में छिपा रखा है।

कविता

क्षणिकाएँ

डॉ. जयसिंह अलवरी

तमाशाई

पिटते का तमाशा
देखने वाले
तमाशाई।
खुद एक पात्र है
सदा जग हँसाई के।।

नींद तक में

झूठे रिश्ते
नकली नाते
बाद में बहुत
रुलाते हैं।
दिन का चैन
और
रात की नींद
अक्सर उड़ाते हैं।।

वे अब

हर दिन, हर पल
मकसद जिनका कभी
शोर मचाना
और
हंगामा खड़ा करना।
वे अब
सत्ता का सुख भोग रहे हैं।
अच्छे-अच्छे
नित्य समूह में
धोखा दे रहे हैं।

बरकरार

वह दीन बेचारा
अपनी माली हालात का
हवाला देकर
बार-बार कह रहा था
सिर्फ एक उपकार
और कर दीजिए
इस दुखिया पर
कल सूद सहित चुका दूँगा
हर अहसान का।
मगर-उसका दिल नहीं
पसीजा
क्योंकि
वह उसकी माली हालात का
फायदा उठाकर
बरकरार रखना चाहता था
अपनी झूठी शान को।।

Editor, Sahitya Sarovar, New Delhi House, Near Bus Stand, Siruguppa - 583121
Bellary Dist (Karnataka)

मिलनसार के भाव को, जनन करेगा प्रेम।
वह मैत्री को जन्म दे, जो है उत्तम क्षेम।। - **तिरुवल्लुवर**

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष

प्रकृति संदेश / सोहनलाल द्विवेदी

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ उठ गिर गिर तरल तरंग
भर लो भर लो अपने दिल में
मीठी मीठी मृदुल उमंग!

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार,
नभ कहता है फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार!

यह धरती कितना देती है / सुमित्रानंदन पंत

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा!

पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी में न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए!
मैं हताश हो बाट जोहता रहा दिनों तक

बाल-कल्पना के अपलक पाँवडे बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था !
अर्द्धशती हहराती निकल गई है तबसे!

कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूली, शरदें मुसकाई;
सी-सी कर हेमन्त कँपे, तरु झरे, खिले वन!
औ' जब फिर से गाढ़ी, ऊदी लालसा लिए

गहरे, कजरारे बादल बरसे धरती पर,
मैंने कौतूहलवश आँगन के कोने की
गीली तह यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे

भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिए हो!
मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं सन्ध्या को आँगन में

टहल रहा था, तब सहसा, मैंने देखा
उसे हर्ष-विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!
देखा - आँगन के कोने में कई नवागत
छोटे-छोटे छाता ताने खड़े हुए हैं!

छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं प्यारी-
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे-

डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से!
निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता -
सहसा मुझे स्मरण हो आया, कुछ दिन पहिले
बीज सेम के मैने रोपे थे आँगन में,

और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है!
तब से उनको रहा देखता धीरे-धीरे

अनगिनती पत्तों से लद, भर गई झाड़ियाँ,
हरे-भरे रंग गए कई मखमली चंदोवे!
बेलें फैल गई बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,
मैं अवाक् रह गया-वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे तारों से छितरे, फूलों के छीटे
झागों-से लिपटे लहरों श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों से!

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ फूटी !
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,
पतली चौड़ी फलियाँ! उफ उनकी क्या गिनती!
लम्बी-लम्बी अँगुलियों-सी नन्हीं-नन्हीं
तलवारों-सी पन्ने के प्यारे हारों-सी,
झूठ न समझे चन्द्र कलाओं-सी नित बढ़ती,
सच्चे मोती भी नहियों-सी ढेर-ढेर खिल
झुण्ड-झुण्ड झिलमिलकर कचपचिया तारों-सी!

आः इतनी फलियाँ टूटी, जाड़ों भर खाई,
सुबह शाम वे घर-घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने-अनजाने सब लोगों में बँटवाई
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतों ने
जी भर-भर दिन-रात महुल्ले भर ने खाई!
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ!

यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में छिः स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने है;
इसमें जन की क्षमता का दाने बोने है,
इसमें मानव-ममता के दाने बोने है,
जिससे उसके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ-
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे।

प्रचारकों के ध्यानार्थ
सभा द्वारा संचालित ऑन लाइन वर्ग

(1) **बोलचाल हिन्दी - प्रारंभिक 30 वर्ग - 1½ घंटे प्रति वर्ग**
सोम, बुध, शुक्र - सायं - 07.00 - 08.30
जनवरी-मार्च; अप्रैल-जून; जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर

(2) **बोलचाल हिन्दी - उच्च श्रेणी 30 वर्ग - 1½ घंटे प्रति वर्ग**
मंगल, गुरु, शनि - सायं - 07.00 - 08.30
जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर

(3) **ऑनलाइन अनुवाद - 10 वर्ग**
प्रति इत्वार - सायं - 05.00 - 08.00
जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर

विवरण के लिए सभा का वेबसाइट - **www.dbhpscentral.org** देखें;

प्रधान सचिव

नए प्रतिमान स्थापित करने की आवश्यकता है : सन्दीप तोमर

साक्षात्कारकर्ता : सुमन युगल

(सन्दीप तोमर देश की राजधानी दिल्ली में रहकर साहित्य सेवा कर रहे हैं, मूल रूप से वे उत्तर प्रदेश के मुजफ़्फ़रनगर जिले के गाँव साक्षात्कारकर्ता : सुमन युगल गंगधाड़ी से ताल्लुक रखते हैं। लम्बे समय से लेखन से जुडे रहे हैं, साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अध्ययन और लेखन उन्हें विशिष्ट पहचान देता है। लघुकथा, कहानी, उपन्यास, कविता, नज़्म, संस्मरण इत्यादि विधाओं पर उन्होंने अपनी कलम चलाई है। वर्तमान में हिंदी उपन्यासों से उन्होंने साहित्य में एक अलग पहचान बनाईं है। सन्दीप तोमर से कवयित्री सुमन युगल की बातचीत।)

सुमन युगल : सन्दीप जी, आप हमारे शहर यानि मुज़फ़्फ़रनगर में जन्मे, पले-बढ़े और महानगर को अपनी कर्म-स्थली बनाया। जानना चाहती हूँ इसके पीछे कोई खास योजना थी या...?

सन्दीप तोमर : मेरे बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक की मेरे शहर की यादें मेरे जहन में हैं, यहाँ तक कि मेरे ईमेल पते में भी मेरे गाँव का नाम दर्ज है। मुझे मेरा शहर बहुत प्रिय है, जिसकी भूमि सृजन की भूमि है भले ही वह सृजन खेती से हो या कलम से। इस भूमि ने कितने ही कलमवीरों को जन्म दिया है, इसकी खुशबू को कैसे भुलाया जा सकता है? जहाँ तक सवाल महानगर को कर्मस्थली बनाने का है- शारीरिक दायरे के चलते मुझे महसूस हुआ कि कनेक्टिविटी के चलते मेरे लिए राजधानी दिल्ली अधिक उपयुक्त स्थान है, अतः खतौली में सरकारी नौकरी मिल जाने के बावजूद मैंने महानगर का रुख किया। हाँ, यहाँ आकर समझ आया कि साहित्य के लिहाज से भी मेरे लिए यह महानगरीय जीवन अधिक आसान है।

सुमन युगल : महानगरीय जीवन शैली और ग्राम्य-जीवन शैली दोनों को आपने करीब से देखा, साहित्य रचते हुए इसका लाभ मिला?

सन्दीप तोमर : मेरे पहले उपन्यास 'थ्री गर्लफ्रेंड्स' का नायक इन्हीं दो संस्कृतियों, या कहूँ कि जीवन शैली की ही उपज है। कितनी ही लघुकथाओं, कहानियों में दो अलग-अलग संस्कृतियों का द्वंद्व आप देख सकते हैं। एक कहानी 'ताई' जिसे सेंटपीटर्सन से निकलने वाली पत्रिका 'सेतु' ने छापा था, उसमें भी गाँव और शहर दोनों के जीवन का अंतर स्पष्ट रूप से उपस्थित है।

सुमन युगल : आप एक शिक्षक है। अच्छे कथाकारों में आपकी गणना की जाती है। आपने कहानी, लघुकथा, उपन्यास, संस्मरण और काव्य सब कुछ लिखा, इन सब पर कुछ सवाल हो तो आप क्या कहेंगे?

सन्दीप तोमर : अक्सर सुनता हूँ- 'सुंदर स्त्रियों से गुफ्तुगू/वार्तालाप करने का नाम ग़ज़ल है', उसी तर्ज़ पर मेरी नजर में लघुकथा प्रेयसी संग बैठ किसी प्रसंग की गुफ्तगू का नाम है। लघुकथा के साथ यह महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य है कि जब कोई रचना कथा-विकास के छोटे कलेवर में वांछित परिणति को सिद्ध

करने तक पहुँचने में पूर्ण-रूपेण सक्षम हो तो उसे अनावश्यक विस्तार देने की कोई गुंजाइश/आवश्यकता नहीं होती। कहानी में इससे अधिक विस्तार संभव है लेकिन कहानी में फिर भी संक्षिप्तता होती है, एकपन होता है- एक घटना, जीवन का एक पक्ष, संवेदना का एक बिन्दु, एक भाव, एक उद्देश्य इसकी विशेषता है। इसमें मेरी समझ से समाधान का विशेष महत्व नहीं होना चाहिए। हाँ, इतना अवश्य है कि कहानी अपने अभीष्ट तक पहुँचे। उपन्यास में एक पूरी गाथा, एक या उससे अधिक जीवन को समेटा जा सकता है।

सामान्यतः किसी भी साहित्यिक आंदोलन का सूत्रपात निश्चित रूप से योजनाबद्ध न होकर सहज तथा स्वाभाविक होता है। ऐतिहासिक संदर्भ में विशिष्ट व्यक्तियों तथा विशिष्ट परिस्थितियों के फलस्वरूप ही कोई प्रवृत्ति साहित्य में परिलक्षित होती है। सशक्त होने पर यही प्रवृत्ति धीरे-धीरे एक धारा का रूप ले लेती है, तब जाकर उस धारा का नामकरण होता है। इस प्रकार लेखन की एक नई विधा अस्तित्व में आती है। तो कहानी के साथ यह आन्दोलन बहुत पहले शुरू हुआ। तुलनात्मक रूप से लघुकथा बहुत बाद में अस्तित्व में आई। उपन्यास भले ही पश्चिम की देन माना जाता हो लेकिन हमारे यहाँ महाकाव्य के रूप में यह पहले से विद्यमान रहा।

सुमन युगल : तोमर साहब! आपकी कहानियों में अमूमन चित्रकारी/चित्रकार का जिक्र रहता है। ऐसा लगता है कि आप चित्रकारी से कहीं गहरे जुड़े हैं या फिर यह मात्र कल्पना है?

सन्दीप तोमर : बचपन में मैं चित्रकारी से बहुत डरता था। स्कूल के काम भी बड़े भैया या दीदी से करवाता था, बदले में वे मुझसे कहीं अधिक श्रम करवा लेते थे, लेकिन एक घटना ने मुझे चित्रकारी के निकट ला खड़ा किया। असल में हुआ यूँ कि 1998 में जब चलती बस से गिरने के कारण लिम्ब-फ्रेक्चर हुआ तो एक साल बिस्तर पर रहना पड़ा, तब एक मित्र के लिए स्केच बनाए। उसे स्केच बनाकर भेजता तो वह खुश होती, लेकिन अफसोस है कि वे स्केच उसने न कभी लौटाए, न ही सम्भाल कर रखें। उसके बाद कुछ स्केच काफी समय बाद बनाएँ जिनमें से कुछ मेरे पास हैं। मेरा मानना है कि कोई किसी भी कला का व्यक्ति हो, वह चित्रों से अवश्य ही लगाव रखेगा, अब देखिए न जो कहानी या कथा हम लिखते हैं वह सब स्वयं में एक रेखाचित्र ही तो होता है, जिसमें हम नए-नए रंगों से उसे आकर्षक और मोहक बनाते हैं।

सुमन युगल : प्रेम के विषय में आपके क्या विचार हैं? कैसे परिभाषित करेंगे?

सन्दीप तोमर : प्रेम पर बहुत कुछ लिखा गया, कभी इसे शाश्वत कहा गया तो कभी इसे निष्काम कहा गया। कभी कहा गया कि प्रेम तो अंधी लालसा है। प्रेम अगर एक अंधी लालसा है तो हमें इस भ्रम में क्यों रहना चाहिए कि प्रेम हमें अनिवार्यतया उदात्त ही बनाएगा। प्रेम बहुधा आत्मा के पोषण का ईंधन भी होता है। 'मुझे अमुक से प्रेम है।' यह वाक्य बहुधा किसी की व्याप्ति/प्राप्ति का साधन भी हो सकता है। मैं तो कहता हूँ कि प्रेम में जानने का भाव अधिक जुड़ा है, बिना जाने प्रेम सम्भव ही नहीं है। सच्चा प्रेम उसी व्यक्ति में हो सकता है जिसने अपने आत्म को पूर्ण रूप से जान लिया है। लोग कहते हैं कि जहाँ प्रेम है, वहाँ श्रद्धा है। मुझे लगता है जहाँ श्रद्धा है वहाँ भक्ति तो हो सकती है, प्रेम नहीं हो सकता।

विज्ञान की भाषा में एड्रिनलीन के स्राव के कारण हुआ एक रासायनिक परिवर्तन भी इसे कहा जा सकता है। कुछ लोग इसे दिमाग में होने वाला एक केमिकल लोचा तक कह देते हैं। कुछ को लगता है कि प्रेम एक आदत है किसी के साथ रहने की, किसी के करीब होने की। इतना अवश्य कहूँगा कि प्रेम को किसी परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता। प्रेम स्वयं से होता है, निमित्त कोई भी हो सकता है।

सुमन युगल : कहा जाता है- साहित्य समाज का दर्पण है, इस दृष्टि से मौजूदा साहित्य कसौटी पर कितना खरा उतरता है?

सन्दीप तोमर : साहित्य और समाज को लेकर दो मत हैं, एक- दर्पण सिद्धांत, दूसरा- प्रतिबिम्बन। मैं दूसरे सिद्धांत का पक्षधर हूँ। मेरे विचार से साहित्य समाज का दर्पण न होकर प्रतिबिंब होता है। इसे वैज्ञानिक नियम से समझना होगा। दर्पण तो खुद रचनाकार है, साहित्य वह है जो पाठक देख रहा है, यानि प्रतिबिंब। जो समाज में घट रहा है वही तो साहित्य के रूप में सामने है। लेकिन अगर आपकी बात को आशय के रूप में लेकर प्रश्न पर बात की जाए तो कहना होगा कि आज साहित्य समाज को दिशा देने की बजाय लेखकों की आत्ममुग्धता, खेमेबाजी, दलगत राजनीति, लेखकों का राजनीतिक संरक्षण इत्यादि के चलते अपना उद्देश्य खो चुका है। लेखकों को नई ऊर्जा के साथ नए प्रतिमान स्थापित करने की अवश्यकता है।

सुमन युगल : आपने अभी बात की राजनीतिक संरक्षण की। यह सच है कि लेखन या यूँ कहें कि साहित्य भी राजनीति से अछूता नहीं है। आप खुद विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं की समझ रखते हैं, देश के मौजूदा हालातों के विषय में कुछ कहना चाहेंगे?

सन्दीप तोमर : इस प्रश्न के जवाब को मैं दो भागों में बाँटकर रखना चाहता हूँ- पहला यह कि लेखक किसी एक विचारधारा या पंथ का नहीं होता, वह न वामपंथी होता है, न ही दक्षिणपंथी ही। न वह संघी है, न ही कांग्रेसी या कोई अन्य। लेखक की स्वयं की एक दृष्टि होती है। लेखक को चाहिए कि वह गलत का विरोध करे, न कि स्वयं को किसी एक विचारधारा में बाँध ले। लेखक की नजर में सब रहता है, उसकी दृष्टि से क्या कुछ छिपा रह सकता है? उसका कर्तव्य बनता है कि वह बिना किसी के प्रभाव या लालच में आए तटस्थ होकर लिखे।

दूसरा- मेरी नज़र में देश आज राजनीतिक रूप से बुरे दौर से गुजर रहा है। व्यक्तिगत जीवन में सत्ता का इतना हस्तक्षेप न देखा है, न ही सुना है। किसी के पहनावे, खानपान, विवाह के फैसले, तलाक, लिव इन के चलन इत्यादि के फैसले अगर सत्ता को करने होंगे तो शिक्षा, स्वास्थ्य या रोजगार इत्यादि का दायित्व किसका होगा? सत्ता का दायित्व जनता की बेहतरी से जुड़ा होना चाहिए न कि सेंसरिंग से। आर्थिक मोर्चों पर भी हम सरकारों की विफलताओं से परिचित हैं। मुद्रा का गिरना जारी है, महँगाई चरम पर है, स्वास्थ्य सुविधाओं का हाल हमने हाल ही में देखा है। सरकारों के पास एक रेडीमेड जवाब है- जनसंख्या वृद्धि। मैं कहता हूँ जनसंख्या एक बड़ा संसाधन है, यकीन न हो तो कम जनसंख्या वाले देशों के

आँकड़े उठाकर देखे जा सकते हैं, जरूरत है- समुचित नीति और समुचित उपयोग की, जिस मामले में हम बुरी तरह असफल हैं, और अफसोस के साथ कहना पड़ेगा कि वर्तमान दौर कुछ लम्बा चलेगा।

सुमन युगल : राजनीति के बारे में आपकी व्यक्तिगत राय क्या है? यदि आपको राजनीति में आने का मौका मिले तो किस तरह के बदलाव करना चाहेंगे?

सन्दीप तोमर : मैं कहूँगा कि अभी हम पूरे विश्व के मुक़ाबले बहुत पीछे चल रहे हैं। अगर हमें पर्फेक्ट डेमोक्रेसी की ओर बढ़ना है तो हमें भारतीय राजनीति में बड़े परिवर्तन करने की जरूरत है। विश्व इतिहास बताता है कि पूँजीवाद समस्याओं को बढ़ाता है कम नहीं करता। देश के जो वर्तमान हालात हैं, जो वैश्विक परिदृश्य में हमारी स्थिति है, वह भले ही हंगर इंडेक्स हो या भ्रष्टाचार, समाधान समाजवाद ही है। नेहरू जिस लोकतान्त्रिक समाजवाद की बात करते थे, हमें उसे ग्रहण करना ही होगा, समाधान उसमें ही है। रही बात मेरे राजनीति में आने की या मेरे सरोकार की तो यह स्पष्ट है कि हर व्यक्ति के राजनीतिक सरोकार होते हैं, मेरे भी है, अगर मैं एक्टिव राजनीति में हूँगा तो मैं शिक्षा, स्वास्थ्य और जीविका पर काम करना पसंद करूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि ये अब बुनियादी जरूरतें हैं। अभी जो माहौल बना है जिसमें लोगों को निजीकरण में समाधान दिखाई देता है असल में वे किसी मुगालते में जी रहे हैं। निजीकरण कभी भी कल्याणकारी राज्य में विकल्प नहीं हो सकता। कल्याणकारी राज्य का यह दायित्व है कि वह अपने नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य और संतुलित आहार उपलब्ध कराए। और ये सब समाजवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। किसी भी समाज में शिक्षित जन का होना लोकतन्त्र की मजबूती है, ध्यान रहे हमने पर्फेक्ट डेमोक्रेसी की तरफ बढ़ना है।

सुमन युगल : तो ये माना जाए कि शिक्षा तथा व्यवस्था को दुरुस्त किए बिना समतामूलक समाज की स्थापना एक दिवास्वपन है, फिर हम यह जानना चाहेंगे कि आधुनिक शिक्षा पद्धति के बारे में आपकी क्या राय है?

सन्दीप तोमर : हमारी शिक्षा पद्धति की समस्या यह है हम राजनीतिक आज़ादी के इतने सालों बाद भी अपनी शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन ही करते रहे, जो हमारे सरोकार हैं या जो हमारे समाज की आवश्यकताएँ हैं, उनके हिसाब से हमने अपनी शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने का प्रयास ही नहीं किया। अगर आप मेरे विचार जानना चाहेंगे तो मैं कहूँगा कि हमें गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा की ओर लौटना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को व्यावसायिक शिक्षा पर केन्द्रित करना होगा। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में अनिवार्य रूप से व्यावसायिक पाठ्यक्रम को लागू किया जाए। नई शिक्षा नीति-1986 में दिए गए प्रावधानों को अगर पूरा कर लिया जाए तो अन्य किसी सुधार की गुंजाइश ही न रहे। स्कूली पाठ्यक्रम ऐसा हो कि पूर्वाह्न में सैद्धांतिक विषयों की पढ़ाई कराई जाए और अपराह्न में प्रायोगिक ज्ञान दिया जाएँ। स्कूल में वर्कशॉप हों जहाँ व्यावसायिक शिक्षा का समुचित प्रबंध हो, जिसमें रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े काम व

सामान का बनना, मरम्मत इत्यादि की शिक्षा दी जाए, छात्रों द्वारा तैयार किए गए माल के लिए सरकार बाज़ार उपलब्ध कराए, अधिक से अधिक को-ओपरेटिव स्टोर खोले जाएँ, जहाँ सरकार छात्रों के सामान को महँगे दामों पर खरीदकर उन्हें रियायती मूल्य पर बेचने का समुचित प्रबंध करें। छात्रों को स्किल्ड करने के बाद एक प्रमाणपत्र जारी किया जाए कि वह अपने काम की दक्षता प्राप्त कर चुका है। यह भी सुनिश्चित हो कि दक्षता प्रमाण-पत्र के बिना किसी भी प्लम्बर, इलेक्ट्रिशियन, इत्यादि को निजी काम या अनुबंधित काम करने की अनुमति न हो। आज नई शिक्षा नीति इन जरूरतों को पूरी करने की कोशिश कर रही है।

सुमन युगल : सन्दीप जी आप मूलतः एक साहित्यिक व्यक्ति हैं लेकिन आपके राजनीतिक और शिक्षा पर विचार भविष्य के लिए आशान्वित करते हैं। हम पुनः साहित्य की ओर लौटते हुए पूछना चाहेंगे- आपकी छवि एक यथार्थवादी लेखक की है, साहित्य में अतियथार्थवाद क्या पाठक को निराश तो नहीं कर रहा?

सन्दीप तोमर : सुमन जी, मैं आपकी बात से पूर्णतः सहमत हूँ, कोरा यथार्थ या अतियथार्थ कहीं न कहीं मौलिक लेखन को तो अवरुद्ध करता ही है साथ ही फैंटेसी और कल्पनाशीलता न होने के चलते सर्जना विलुप्त होती जाती है। पाठक हमेशा नयापन खोजता है, जिसके अभाव में एक नैराश्य की स्थिति उत्पन्न होती है। वर्तमान में साहित्य के साथ यह समस्या है कि अब आधिक्य में लिखा जा रहा है और गुणात्मकता ने गुणवत्ता को लीलने का काम किया है। लोग लिख रहें हैं, लगातार लिख रहे हैं, चिंतन-मनन का स्कोप ख़त्म कर दिया है, सिर्फ इसलिए लिखा जा रहा है क्योंकि लिखना है, छपना है, तो यह जो लिखने और छपने की चाह है यह साहित्य का नुक्सान अधिक कर रही है। जब तक पाठक को केंद्र में रखकर लेखन नहीं होगा ये स्थिति अधिक विकट होगी।

सुमन युगलः सुनने में आता है कि वर्तमान में चाहे वह नारीवादी लेखन हो या दलित लेखन या फिर मुख्यधारा का लेखन, आजकल अधिक विवादित लेखन हो रहा है। जहाँ विविधता को देखना भी ख्वाब की तरह है, ऐसे में आपका लेखन विविधता से भरा है, कैसे आप खुद को विवादों से अलग रख पाते हैं?

सन्दीप तोमर : देखिए 'साहित्य जगत में एक स्लोगन चलता है- रातोंरात प्रसिद्धि पानी है तो विवादास्पद विषयों पर लिखें, आधा काम रचना, बचा हुआ काम आलोचक कर देंगे। अभी नारीवाद के नाम पर जो लेखन हो रहा है अगर अपवाद को छोड़ दें तो वह मात्र खुद को विवादित करके चर्चा में बनाए रखने का उपक्रम मात्र है। हाँ, ममता कालिया, दीप्ति गुप्ता, सुधा अरोरा, उषाकिरण खान, डॉ. सूर्यबाला सरीखी लेखिकाओं का लेखन हमें आश्वस्त भी करता है। इन्होंने बिना किसी हो-हल्ले के महिलाओं की पीड़ा को लेखन का हिस्सा बनाकर हमेशा अपनी ओर ध्यान आकृष्ट किया है। स्वयं की बात करूँ तो कहूँगा कि नारी-वेदना बेडरूम से बाहर भी उतनी ही पीड़ादायक है, जितनी बेडरूम के अन्दर। प्रेम और उसके नाम पर होने वाले उपक्रम मेरी रचनाओं का हिस्सा बनते हैं क्योंकि मैंने समाज में बहुत बारीकी से इन सब का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। मेरे लिए प्रसिद्धि लेखन से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, लेखन आत्माभिव्यक्ति और अंतर्वेदना के प्रस्फुटन के लिए नितांत आवश्यक है। यही वजह है कि मैं विविधता में विश्वास करता हूँ।

सुमन युगल : नवोदित लेखकों के लिए क्या संदेश देना चाहते हैं?

सन्दीप तोमर : देखिए, पढ़ना यानि अध्ययन। साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं के अंगोपांग को समझने के लिए यह जरूरी है, लेकिन देखने में आता है कि अधिक पढ़ने से कुछ नवलेखकों का स्वयं का लेखन भी प्रभावित होने लगता है। कुछ नवरचनाकार किसी लेखक से इतने प्रभावित होते हैं कि उनकी शैली को ही अपनाने लगते हैं। जरूरी है कि नई पीढ़ी के लेखक खेमेबाजी से दूर रहें, खुद के लिखे को बार-बार पढ़ें, और खुद के लेखन को खारिज करने से परहेज न करें। एक शब्द लिखने से पूर्व कम से कम सौ शब्द अवश्य पढ़ें। सतत लेखन अवश्य ही शिखर तक ले जाएगा।

252 Laddavala, Kambal Vali Street, Near Chandra Cinema - 251001

लघुकथा

पहचान

- डॉ. सुपर्णा मुखर्जी

गला सूखा जा रहा है पर शरीर में जैसे जान ही न हो, आँखें खुलने को तैयार नहीं। कुछ मिनट यूँ ही खुद के साथ जद्दोजहद करने के बाद ऋचा झटके से उठ बैठने को तैयार हुई कि मुँह से ओह माँ! निकल गया। याद आया उसे एक सप्ताह भी तो नहीं हुआ उसके ट्यूमर ऑपरेशन हुए। नींद ही अच्छी थी। खाली प्यास सता रहा था। आँख खुली तो शरीर से भी ज्यादा मन का दर्द सताने लगा। बच्चेदानी निकाल फेंकना पड़ा। नहीं, वह बाँझ नहीं है। वह एक प्यारी सी बिटिया है लेकिन अब परिवार को कुलदीपक किसी भी हालात में वह दे नहीं सकेगी। पानी पीते-पीते उसने अनुभव किया कि पानी का स्वाद नमकीन हो गया है। ग्लास को पास ही के टेबल पर रखकर सोने के लिए फिर से आँख बंद किया तो कल वाली लेडीज परफ्यूम की खुशबू उसके चारों ओर मंडराने लगी जो निखिल के शर्ट से आ रही थी।

सिर्फ कलवाली लेडीज परफ्यूम नहीं तकरीबन 11 साल से अलग-अलग न जाने कितनी खुशबुओं को उसने सूँघा था। सब जैसे उसे मुँह चिढ़ाने लगे। सब जैसे उस पर हँस रहे थे। जैसे कह रहे हो अब उसका कोई अस्तित्व ही नहीं। उसका कोई अस्तित्व नहीं इस घर में। यह तो बहुत पहले ही वह समझ चुकी थी। पर, वही मन मानता नहीं था। आँख बंद करना मुश्किल हो गया। जैसे-तैसे कपड़े समेटकर ऋचा टेबल के पास गई। अपनी बनाई पैटिंग्स देखती रही। जमाना हो गया कैन्वस, रंग, तूलिका इनको छुए हुए। घर-गृहस्थी उसी में तो रमी हुई थी वह। अब यही घर-गृहस्थी, गृहस्थ का मालिक सब आराम से सो रहे हैं, उसे अकेला छोड़कर। शरीर की तकलीफ़ शायद कम हो जाती अगर सिरहाने बैठकर कोई बालों को सहला देता। उस अपनी ही सोच पर हँसी आ गई। फिर वहीं बैठकर लकीरें खींचते बना डाली परफ्यूम की बोतलें और शीर्षक दिया 'यह मैं नहीं'।

Hindi Teacher, Bhawans Vivekananda College, Secunderabad - 500094

का, के, की का प्रयोग

- डॉ. बी. संतोषी कुमारी

'का' का प्रयोग :

शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का संबंध किसी दूसरी वस्तु से प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। अर्थात संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो हमें किन्हीं दो वस्तुओं के बीच संबंध का बोध कराता है वह संबंध कारक है। इसका विभक्ति चिह्न 'का', 'के', 'की' है। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग व वचन के अनुसार परिवर्तित होती हैं।

संबंध कारक के प्रयोग के सभी नियम इस प्रकार हैं-

संबंध कारक का विभक्ति चिह्न 'का' होता है। वचन तथा लिंग के अनुसार विकृति 'के' और 'की' है। संबंध कारक से अधिकतर कर्तृत्व, कार्य कारण, मोल, भाव, परिमाण, द्रष्टव्य आदि का बोध होता है

'का' का प्रयोग पुल्लिंग शब्दों के लिए होता है। जैसे- यह **रीमा का घर है**। यहाँ पहला शब्द 'रीमा' स्त्रीलिंग है और दूसरा शब्द 'घर' पुल्लिंग है।

'का' का प्रयोग करते समय हमें उस शब्द का लिंग देखना होगा, जो 'का' के बाद प्रयोग किया जाएगा। उदाहरण के लिए यह रीमा का घर है। यहाँ हमें दूसरे शब्द 'घर' का लिंग देखना होगा जो पुल्लिंग है। अन्य उदाहरण-

नीम का पेड़ बहुत बड़ा है।
रमा का भाई क्यों आया था ?
रोहन का बस्ता बहुत भारी है।

अब आप यहाँ देखेंगे कि 'का' के बाद जो शब्द प्रयोग किए जा रहे हैं पेड़, भाई, बस्ता ये सभी पुल्लिंग हैं। 'का' से पहले का शब्द हमें नहीं देखना है, वह स्त्रीलिंग भी हो सकता है और पुल्लिंग भी हो सकता है, लेकिन 'का' के बाद जो शब्द प्रयोग किया जा रहा है उस शब्द का हमें देखना है कि वह स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग। अगर वह पुल्लिंग है तो हमें 'का' का ही प्रयोग करना है।

'के' का प्रयोग :

अब हम देखेंगे कि 'के' का प्रयोग हम कब, कैसे और कहाँ करते हैं?

'के' का प्रयोग बहुवचन और आदरसूचक शब्दों के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए-

रमा के कपड़े गीले हो गए हैं।
रमा के पिता जी बाजार गए हैं।

पहले उदाहरण में हम देख रहे हैं कि 'कपड़े' शब्द बहुवचन है, इसलिए हम 'के' का प्रयोग करेंगे। यहाँ 'के' से पहले प्रयोग किया गया शब्द 'रमा' एकवचन है और 'के' के बाद प्रयोग किया गया शब्द 'कपड़े' बहुवचन है, इसलिए यहाँ 'के' का प्रयोग किया जाएगा।

हमें 'के' से पहले प्रयोग किया जानेवाला शब्द नहीं देखना है। हमें देखना है कि 'के' के बाद प्रयोग किया जानेवाला शब्द बहुवचन ही होना चाहिए।

दूसरा उदाहरण हम देख रहें हैं कि **रमा के पिताजी** बाजार गए हैं।

यहाँ 'रमा' एकवचन है और पिताजी भी एकवचन है लेकिन पिताजी शब्द आदरसूचक है इसलिए यहाँ 'के' का प्रयोग किया गया है।

अन्य उदाहरण देखते हैं-

रमा के दोस्त ईमानदार हैं।

भारत के खिलाड़ी बहुत मेहनती हैं।

चेन्नै के लोग सजग नागरिक हैं।

अब यहाँ पर हम देखेंगे कि दोस्त, खिलाड़ी, लोग ये सभी शब्द बहुवचन हैं, इसलिए यहाँ पर 'के' का प्रयोग किया गया है।

'की' का प्रयोग :

'की' का प्रयोग स्त्रीलिंग शब्दों के लिए होता है।

'की' का प्रयोग संज्ञा के बाद होता है। उदाहरण देखते हैं- रोहन की बहन सीता है। यहाँ पहला शब्द रोहन संज्ञा है और दूसरा शब्द बहन संज्ञा लेकिन स्त्रीलिंग है। पहला शब्द स्त्रीलिंग भी हो सकता है और पुल्लिंग भी, लेकिन शब्द संज्ञा होना चाहिए और दूसरा शब्द हमेशा स्त्रीलिंग ही होना चाहिए। 'की' का प्रयोग करते समय हमें उस शब्द का लिंग देखना होगा जो 'की' के बाद प्रयोग किया जाएगा और देखना है कि 'की' से पहले वाला शब्द संज्ञा हो।

अन्य उदाहरण देखते हैं- **लोहे की जंजीर।** यहाँ हमें दूसरे शब्द का लिंग देखना है और दूसरा शब्द जंजीर स्त्रीलिंग है, इसलिए यहाँ 'की' का प्रयोग किया गया है। अगर यहाँ पर शब्द जंजीर के स्थान पर दरवाजा होता तो शब्द पुल्लिंग होने पर भी हम 'की' का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। तब हम कहते- लोहे का दरवाजा।

ऐसे ही उदाहरण में **रोहन की बहन है**- बहन शब्द स्त्रीलिंग है, इसलिए हमने यहाँ 'की' का प्रयोग किया है। अगर यहाँ पर पुल्लिंग शब्द होता, तो यहाँ पर हम प्रयोग करते **रोहन का भाई**। आप समझ गए होंगे कि 'की' का प्रयोग करने के लिए हमें यह देखना है 'की' के बाद प्रयोग किया जानेवाला शब्द

स्त्रीलिंग हो और 'की' से पहले वाला जो शब्द है वह हमेशा संज्ञा होना चाहिए।

'की' का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ किसी संज्ञा या सर्वनाम का किसी से संबंध बताना, दिखाना या जोड़ना हो। कुछ उदाहरण देखिए- मोहन की किताब, फिल्म की कहानी, रोगी की हालत, सम्मान की बात, चेहरे की चमक, जनता की आवाज़, हमारे देश की संस्कृति महान है, पेड़ की टहनी टूट गई, उसे बाल की खाल निकालने की आदत है।

का/के/ की कारकों का प्रयोग संबंध कारक की षष्ठी विभक्ति के रूप में किया जाता है। का/ के/ की कारकों का प्रयोग एक शब्द का दूसरे शब्द से संबंध जोड़ने के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है।

Assistant Professor, Post Graduate and Research Institute,
D.B.Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Chennai - 600017

वुल्लि श्रीसाहिती, आठवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय, अशोक नगर, चेन्नै
Vulli Sri Sahiti, VIII-C, Kendriya Vidyalaya, Ashok Nagar, Chennai

संज्ञा

किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी, वस्तु और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद :

संज्ञा के प्रमुख भेद इस प्रकार हैं-

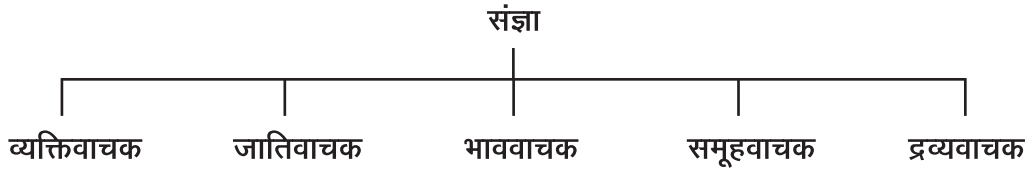

व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान और वस्तु के नाम का पता चलता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-

व्यक्ति : राम, गोपाल, सीता, गीता

स्थान : चेन्नै, दिल्ली, केरल, हैदराबाद

वस्तु : रामायण, महाभारत, नंदन

जातिवाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों से उसके पूरे वर्ग अथवा जाति का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-

प्राणी : लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, पक्षी

स्थान : शहर, देश, गली, बाज़ार, नदी

वस्तु : पुस्तक, खिलौना, वाहन, कपड़ा

भाववाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु की स्थिति, भाव और दशा आदि का पता चलता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- मुस्कान, लड़ाई, प्यार, हँसी, दुख

समूहवाचक संज्ञा : जो संज्ञा शब्द एक ही जाति के व्यक्ति या वस्तुओं के समूह का बोध करते हैं, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेवा, गुच्छा, ढेर, भीड़, टोली

द्रव्यवाचक संज्ञा : जो संज्ञा शब्द किसी धातु, द्रव्य या पदार्थ का बोध कराते हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सोना, आटा, दूध, पानी

('हिंदी प्रचार समाचार' डेस्क)

बूझो तो जानो

वर्ग पहेली

रंगों को ढूँढ़िए :-

गु	ला	बी	अं	गू	री	गे
टी	ले	स	के	पी	रु	का
स	नी	मा	स	आ	ला	बैं
फे	खा	गी	रि	च	ह	ग
द	रं	की	या	रा	भू	नी
ना	फि	रो	ज़ी	ल	ल	ला

('हिंदी प्रचार समाचार' डेस्क)

लेखकों और प्रचारकों से अनुरोध

- 'हिंदी प्रचार समाचार' सभा की शैक्षिक एवं सूचना प्रधान मुख पत्र है। इसको उपयोगी, रोचक एवं पठनीय बनाने हेतु सभी लेखकों और प्रचारक बंधुओं का सहयोग प्रार्थित है।
- प्रकाशनार्थ सामग्री भेजते समय अपने पास एक प्रति अवश्य रख लें। अप्रकाशित व अस्वीकृत सामग्री वापस भेजना संभव नहीं है।
- कागज की एक ही तरफ सुपाठ्य अक्षरों में लिखकर या टंकित करवाकर भेजें। स्वीकृत रचना संशोधन के उपरांत यथासमय प्रकाशित की जाएगी। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष अवश्य लिखें।
- परीक्षोपयोगी लेख अनुभवी एवं सक्रिय प्रचारकों से आमंत्रित हैं। विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर सरल एवं सुबोध शैली में तैयार करके भेजें।
- सभी पाठकों से पत्रिका के संबंध में पत्र आमंत्रित हैं।
- इस पत्रिका के स्तर एवं गुणवत्ता बनाए रखने में आपका सहयोग अपेक्षित है।
- कृपया रचना भेजने के बाद दूरभाष के माध्यम से बार-बार जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथासमय होगा।
- कृपया समाज के बीच झूठी छवि फैलाकर सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने वाले विवादास्पद मुद्दों वाले लेख न भेजें। उन पर विचार नहीं किया जाएगा।
- पुनः आपसे निवेदन है कि कोई भी अस्वीकृत रचना वापस नहीं भेजी जाएगी। अतः कृपया उसकी एक प्रति अपने पास आवश्य रख लें।

- संपादक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रचारक प्रशिक्षण शिबिर : 01.07.2023

मद्रास के प्रमाणित प्रचारकों के लाभार्थ 01.07.2023 को सभा-परिसर में एकदिवसीय प्रशिक्षण शिबिर आयोजित किया जाएगा।

उद्घाटन सत्र	:	पूर्वाह्न 9:30
उपस्थित प्रचारकों का परिचय		
प्रशिक्षण सत्र	:	व्याकरण, पद्य/ नाटक, गद्य, निबंध/ जीवनी
भोजनावकाश	:	मध्याह्न 1:00 से 2:00 बजे तक
प्रचारकों के लिए लघु प्रश्नावली	:	मध्याह्न 2:00 से 3:00 बजे तक

धन्यवाद ज्ञापन / राष्ट्रगान

(अल्पाहार और भोजन की व्यवस्था की जाएगी।)

(प्रवेश शुल्क रु.150/- जमा करना होगा।)

राजाजी विद्यालय नर्सरी और प्राइमरी स्कूल
ऊटी : वार्षिकोत्सव - 2023

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा ऊटी में संचालित राजाजी विद्यालय नर्सरी और प्राइमरी स्कूल में 26 अप्रैल, 2023 को हर्षोल्लास के साथ वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री अब्रहम आनंद ने भाग लिया। विशेष अतिथि श्रीमती नंदा कोठारी (जैन महिला मंडल की अध्यक्ष), श्रीमती अमुदवल्ली (सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी, नीलगिरि) ने बच्चों को प्रोत्साहित किया। तीनों अथितियों ने अपने निजी खर्च पर विद्यालय की अभिवृद्धि के लिए सहयोग किया। राजाजी विद्यालय नर्सरी और प्राइमरी स्कूल, ऊटी की प्रधान आचार्य श्रीमती राजेश्वरी पॉल ने अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर बच्चों का रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

'YouTube' Channel
प्रचारक बंधुओं के लिए शुभ समाचार

DBHPS, Central Sabha Chennai के नाम से सभा ने अपना **'YouTube'** चैनल शुरू किया है। इसमें सभा संबंधी समाचार, परीक्षा समाचार, समारोह, पाठ्य पुस्तक संबंधी संक्षिप्त विवरण होंगे। आप सबसे विनम्र अनुरोध है कि इस चैनल को 'Like' और 'Subscribe' करें।

POST GRADUATE AND RESEARCH INSTITUTE
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS
Declared by Parliament as an Institution of National Importance by Act 14 of 1964
Accredited with 'B+' Grade by NAAC
ADMISSION NOTIFICATION 2023– 2024
Applications are invited for the following Regular & Part Time
Courses in Hindi at
HYDERABAD/DHARWAD/ERNAKULAM/CHENNAI CENTRES
REGULAR COURSES
M.A. (Semester System)
PART TIME : **P.G. Dip. in Translation / Hindi Journalism**

1. **M.A. (Hindi) Language & Literature** : Two years
ELIGIBILITY : i) A pass in B.A./B.Sc./B.Com. (10+2+3 Pattern) with Hindi as a Subject (OR) ii) A Pass in B.A./B.Sc./B.Com. (10+2+3 Pattern) with a Pass in R.B. Praveen (OR) its equivalent Hindi Examination recognized by the Sansthan. State Reservation Policy will be followed.

PART TIME COURSES
(One Year)

1. **P.G. Diploma in Translation**
2. **P.G. Diploma in Hindi Journalism**

ELIGIBILITY : 1. A Pass in B.A./B.Sc./B.Com. (10+2+3 Pattern) with Hindi as a Subject or a Pass in R.B. Praveen (OR) its equivalent Hindi Examination recognized by the Sansthan.

Application Forms/Prospectus

M.A., P.G.D.T., P.G.D.J. : Rs. 600/-

Admission Application forms are available on Sabha's website: ***www.dbhpscentral.org***
Last date for submission of filled up Application : 11-07-2023
Applicants may contact directly to the concerned P.G. Centres.

The Prof. & Head
P.G. Centre, DBHP Sabha, CHENNAI – 8555051958
P.G. Centre, DBHP Sabha, HYDERABAD, (ANDHRA PRADESH&TELENGANA) 9945664379
P.G. Centre, DBHP Sabha, DARWAD, KARNATAKA – 70190 87077
P.G. Centre, DBHP Sabha, ERNAKULAM, KERALA – 97461 56060

POST GRADUATE AND RESEARCH INSTITUTE
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS

Declared by Parliament as an Institution of National Importance by Act 14 of 1964
Accredited with 'B+' Grade by NAAC
All B.Ed./M.Ed. Colleges are Recognised by NCTE, SRC, NEW DELHI

ADMISSION NOTIFICATION 2023 – 2024

1. **B.Ed. (Hindi Medium) : Two Years :**
   ELIGIBILITY : (10+2+3 Pattern) Candidates with atleast 50% marks either in the Bachelor's Degree or any other qualification equivalent thereto, are eligible to seek admission as per the NCTE Norms.

2. **M.Ed. (Hindi Medium)** : **Two years** : Only at **Dharwad, Karnataka**
   ELIGIBILITY : (10+2+3+2 Pattern) Candidates with 50% marks in Courses like B.A./B.Ed., B.Sc./B.Ed., M.A./B.Ed., M.Sc./B.Ed., B.Ed. (Integrated) Courses. B.El.Edn. with Hindi as one of the subjects are eligible to seek admission as per the NCTE Norms.

Relaxation for SC/ST/OBC/PWD and other categories in the percentage of eligibility condition for both B.Ed. and M.Ed. courses shall be as per the State Government rules.

Admission is open in all the **11 B.Ed. Colleges** run by DBHP Sabha in the States : Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Karnataka & Kerala. **Colleges at** : **CHENNAI, HYDERABAD, VIJAYAWADA, VISAKHAPATNAM, BANGALORE, BELGAUM, VIJAYPUR, DHARWAD, MYSORE, ERNAKULAM, NILESHWARAM.**

For Application and Prospectus : Rs. 600/-
Last date for submission of filled up Application : 30-08-2023
Applicants may contact directly to the concerned college.

Principal B.Ed., Chennai : 044-24341824- Extn, 123
Secretary, Andhra Branch : 040-23316865/23314949
Secretary, Karnataka Branch : 0836 – 2747763/2435495
Secretary, Kerala Branch : 0484 – 2377766/2375115

Duly filled–in application form shall be submitted to the concerned college Principals in the respective States.

Admission Application forms available on Sabha's website : ***www.dbhpscentral.org***

REGISTRAR

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च परीक्षा समय सारणी – अगस्त, 2023
केरल, तमिलनाडु, और चेन्नई शहर के लिए

परीक्षाएँ		केरल/तमिलनाडु/चेन्नई महानगर	
प्रवेशिका	पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
प्रवेशिका	पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM
प्रवेशिका	पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
विशारद उत्तरार्द्ध	पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
विशारद उत्तरार्द्ध	पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM
मौखिक परीक्षा		13.08.2023	11.00 AM - 01.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM
मौखिक परीक्षा		13.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM

प्रारंभिक परीक्षा समय सारणी – अगस्त, 2023

परीक्षाएँ			केरल	तमिलनाडु	चेन्नई महानगर
प्राथमिक		10.00 AM - 12.30 PM	**13.08.2023**	**20.08.2023**	**20.08.2023**
मध्यमा	पत्र - I	10.00 AM - 12.30 PM	**13.08.2023**	**20.08.2023**	**20.08.2023**
मध्यमा	पत्र - II	02.00 PM - 04.30 PM	**13.08.2023**	**20.08.2023**	**20.08.2023**
राष्ट्रभाषा	पत्र - I	10.00 AM - 12.30 PM	**13.08.2023**	**20.08.2023**	**20.08.2023**
राष्ट्रभाषा	पत्र - II	02.00 PM - 04.30 PM	**13.08.2023**	**20.08.2023**	**20.08.2023**

– परीक्षा सचिव

पाठ्य पुस्तक-सूची, अगस्त 2023
SYLLABUS FOR AUGUST 2023

प्राथमिक	PRATHMIC
प्राथमिक पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Prathamic Patya Pusthak (with Question & Answer)
मध्यमा	**MADHYAMA**
मध्यमा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Madhyama Patya Pusthak (with Question & Answer)
राष्ट्रभाषा	**RASHTRABHASHA**
राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Rashtrabhasha Patya Pusthak (with Question & Answer)
प्रवेशिका	**PRAVESHIKA**
पुराना पाठ्यक्रम	**Old Syllabus**
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन पद्य चयनिका -1	Naveen Padya Chayanika - 1
नवीन गद्य चयनिका -1	Naveen Gadya Chayanika - 1
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
सत्य का स्वर	Sathya Ka Swar
सत्यमेव जयते (संवर्धित)	Sathyameva Jaythe (Revised)
हिंदी व्याकरण प्रवेशिका-1	Hindi Vyakaran Praveshika- 1
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
भाग – I	PART - I
हिंदी रत्नाकर	Hindi Ratnakar
भाग – II	PART -II
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)	(Regional Language – Telugu)
गद्य मंदारम	Gadya Mandaaram
काव्य मंजरी (तेलुगु)	Kavya Manjari (Telugu)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4)	**(Pub.: D.B.H.P.Sabha (Andhra) Khairatabad, Hyderabad-4)**
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)	(Regional Language – Kannada)
कन्नड गद्य भारती भाग–1	Kannada Gadya Bharati Part-1
कन्नड पद्य भारती भाग–1	Kannada Padya Bharati Part-1
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (कर्नाटक), डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड़-580 001)	**(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Karnataka), D.C. Compound, Dharwad-580 001)**
(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
गद्य तरंगावली	Gadya Tharangavali
पद्य तरंगावली	Padya Tharangavali
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (केरल), चित्तूर रोड़, एरणाकुलम, कोच्चिन -16)	**(Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala), Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)**

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
तमिल पोषिल–1 (पद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)
तमिल पोषिल–2 (गद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (तमिलनाडु), तेन्नूर हाई रोड़, तिरुच्चि-17)	**(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Tamil Nadu), Tennur High Road, Trichy-17)**
(प्रादेशिक भाषा - मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)	Shreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)
उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी, कांटिनेंटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे–30)	Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni, Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

नया पाठ्यक्रम (प्रवेशिका) / New Syllabus (PRAVESHIKA)

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-1 (प्रथम पत्र)	**Praveshika Patya Pustak-1 (First Paper)**
प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-2 (द्वितीय पत्र)	**Praveshika Patya Pustak-2 (Second Paper)**
प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-3 (तृतीय पत्र)	**Praveshika Patya Pustak-3 (Third Paper)**
भाग – II	PART -II
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)	(Regional Language – Telugu)
गद्य मंदारम	Gadya Mandaaram
काव्य मंजरी (तेलुगु)	Kavya Manjari (Telugu)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4)	**(Pub.: D.B.H.P.Sabha (Andhra) Khairatabad, Hyderabad-4)**
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)	(Regional Language – Kannada)
कन्नड गद्य भारती भाग–1	Kannada Gadya Bharati Part-1
कन्नड पद्य भारती भाग–1	Kannada Padya Bharati Part-1
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (कर्नाटक), डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड़-580 001)	**(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Karnataka), D.C. Compound, Dharwad-580 001)**
(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
गद्य तरंगावली	Gadya Tharangavali
पद्य तरंगावली	Padya Tharangavali
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (केरल), चित्तूर रोड़, एरणाकुलम, कोच्चिन -16)	**(Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala), Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)**
(प्रादेशिक भाषा - तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
तमिल पोषिल–1 (पद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)
तमिल पोषिल–2 (गद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (तमिलनाडु), तेन्नूर हाई रोड़, तिरुच्चि-17)	**(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Tamil Nadu), Tennur High Road, Trichy-17)**
(प्रादेशिक भाषा - मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)	Shreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)
उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी, कांटिनेंटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे–30)	Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni, Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

पुराने पाठ्यक्रम और नए पाठ्यक्रम की किताबें दोनों सिर्फ 2023 अगस्त की परीक्षा के लिए मात्र लागू होगा। फरवरी 2024 से प्रवेशिका का नया पाठ्यक्रम मात्र लागू होगा ।

राष्ट्रभाषा विशारद पूर्वार्द्ध

(प्रथम पत्र)

नवीन गद्य चयनिका - 2
निर्मला
नवीन कहानी कलश

(द्वितीय पत्र)

नवीन हिन्दी व्याकरण
व्यावहारिक हिन्दी (पत्र-लेखन)
(हिन्दी संक्षिप्त लेखन)
हिन्दी निबंध संकलन
अनुवाद अभ्यास-5

(तृतीय पत्र)
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)

गद्य चंद्रिका
काव्य कुसुमावली

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)

आधुनिक कन्नड गद्य भारती–2
परिसर मानव इतर कवितेगलु
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

पतिनोन्नु कथैकळ
पद्य रत्नम (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

इलक्किय कनिगळ
मलर्चेण्डु (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

चांदणवेल (संपादक : गो.प. कुलकर्णी)
गोतावळा (लेखक : आनंद यादव)

R.B. VISHARAD POORVARDH

(First Paper)

Naveen Gadya Chayanika-2
Nirmala
Naveen Kahani Kalash

(Second Paper)

Naveen Hindi Vyakaran
Vyavaharik Hindi (Letter Drafting)
(Hindi Sankshipta Lekhan)
Hindi Nibandh Sankalan
Anuvad Abhyas-5

(Third Paper)
(Regional Language – Telugu)

Gadya Chandrika
Kavya Kusumavali

(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(Regional Language – Kannada)

Adhunik Kannada Gadya Bharati-2
Parisara Manava Ithara Kavithegalu
(Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)

(Regional Language – Malayalam)

Pathinonnu Kathaikal
Padya Ratnam (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Kerala)

(Regional Language – Tamil)

Ilakkiya Kanigal
Malar Chendu (Pub. : D.B.H.P. Sabha, T.N.)

(Regional Language – Marathi)

Chaandhanavel (Editor: G.P. Kulkarni)
Gothavala (Author: Anand Yadav)

राष्ट्रभाषा विशारद उत्तरार्द्ध

(प्रथम पत्र)

नवीन पद्य चयनिका - 2
पंचवटी

(द्वितीय पत्र)

ध्रुवस्वामिणी
प्राचीन भारत का इतिहास
सूर्योदय (प्रकाशन-द.भा.हिं.प्र. सभा)

(तृतीय पत्र - मौखिक)

मौखिकी - प्रश्नोत्तरी सहित लिखावट के नमूने

R.B. VISHARAD UTTHARARDH

(First Paper)

Naveen Padya Chayanika-2
Panchavati

(Second Paper)

Dhruva Swamini
Praacheen Bharat ka Ithihas
Sooryodaya (Sabha Pub.)

(Third Paper – Viva-voce)

Viva-voce with Likhavat ke Namune

राष्ट्रभाषा प्रवीण पूर्वार्द्ध	R.B. PRAVEEN POORVARDH
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन गद्य चयनिका - 3	Naveen Gadya Chayanika-3
स्कन्दगुप्त (नाटक)	Skandagupta (Natak)
निबंध सौरभ	Nibandh Sowrabh
ग़बन (प्रेमचंद)	Gaban (Premchand)
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	Hindi Sahitya ka Sankshipt Itihas
दक्षिण में हिन्दी प्रचार आंदोलन का इतिहास	Dakshin me Hindi Prachar Andolan ka Itihas
दक्षिणी कथाएँ (परिवर्द्धित)	Dakshini Kathayen (Revised)
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)	**(Regional Language – Telugu)**
व्यास मंजूषा	Vyaas Manjusha
काव्य माला (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)	Kavya Mala (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)	**(Regional Language – Kannada)**
कन्नड कथा भारती	Kannada Katha Bharathi
कन्नड पद्य भारती, भाग–3	Kannada Padya Bharati, Part-3
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)	(Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)
(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
चिन्ता विष्टयाय सीता	Chintha Vistayaya Seetha
मलयाल माधुर्यम (उपलब्ध : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)	Malayala Madhuryam (Available: D.B.H.P.Sabha,Kerala)
(प्रादेशिक भाषा - तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
कंबरामायणम – वालिवधैप्पडलम	Kamba Ramayanam - Valivadhaipadalam
कवितैप्पूँगा	Kavithaipoonga
(पुरनानूरु और कंब रामायण को छोड़कर)	(Except Puranaanooru and Kamba Ramayan)
तमिल इलक्किय वरलारु	Tamil Ilakkiya Varalaaru
(प्रका.: द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)	(Pub.: D.B.H.P.Sabha,Tamil Nadu)
(प्रादेशिक भाषा - मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
गावगुंड (प्रकाशक : लेखक – ग.ल. टोकल	Gaavagund (Pub.: Author - G.L. Tokal
श्री लेखन वाचन भण्डार 1004, बुधवारपेट, पुणे–2)	Sri Lekan Vaachan Bandar 1004, Budhvarpet, Pune-2)
अभ्र (संपादक : कृ.व. निकुम्ब)	Abhra (Editor: K.V. Nikumba)

राष्ट्रभाषा प्रवीण उत्तरार्द्ध	R.B. PRAVEEN UTTARARDH
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
रश्मिरथी	Rashmirathi
नवीन पद्य चयनिका-3	Naveen Padya Chayanika-3
प्राचीन पद्य चयनिका	Pracheen Padya Chayanika
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
काव्य के रूप	Kavya Ke Roop
काव्य शास्त्र (रस,छंद अलंकार)	Kavya Shastra (Ras, Chandh, Alankar)
1. नौ रसों का सामान्य परिचय।	

2. शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति।
3. अर्थालंकार : उपमा, प्रदीप, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, भ्रम, संदेह, दृष्टान्त, उदाहरण, उल्लेख, निदर्शन, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा, समासोक्ति, व्याजस्तुति, विरोधाभास।
4. छन्द : चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लास, कुंडलियाँ, कवित्त, सवैया, छप्पय, दृतविलंबित, वंशस्य, मालिनी, मंद्राक्रान्ता।

भाषा विज्ञान प्रवेश	Basha Vignan Pravesh
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
त्रिपथगा (निबंध संग्रह)	Thripathaga (Essays)
प्रयोजनमूलक हिंदी (सभा प्रकाशन)	Prayojan moolak Hindi (Sabha Pub.)
अनुवाद अभ्यास - 6	Anuvad Abhyas-6
(मौखिक)	**(Viva-voce)**
लिखावट के नमूने	Likhavat ke Namune

आसान परीक्षा पाठ्यक्रम	EASY LANGUAGE SYLLABUS
(प्रवेशिका)	**(PRAVESHIKA)**
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – I	**Telugu :** Telugu Bhasha Bodhini-I
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – I	**Kannada :** Kannada Bhasha Bodhini-I
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – I	**Tamil :** Tamil Bhasha Bodhini-I
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – I	**Malayalam :** Malayalam Bhasha Bodhini-I
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – I	**Marathi :** Marathi Bhasha Bodhini-I
(रा.भा. विशारद पूर्वार्द्ध)	**(R.B. VISHARAD POORVARDH)**
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – II	**Telugu :** Telugu Bhasha Bodhini-II
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – II	**Kannada :** Kannada Bhasha Bodhini-II
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – II	**Tamil :** Tamil Bhasha Bodhini-II
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – II	**Malayalam :** Malayalam Bhasha Bodhini-II
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – II	**Marathi :** Marathi Bhasha Bodhini-II
(रा.भा. प्रवीण पूर्वार्द्ध)	**(R.B. PRAVEEN POORVARDH)**
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – III	**Telugu :** Telugu Bhasha Bodhini-III
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – III	**Kannada :** Kannada Bhasha Bodhini-III
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – III	**Tamil :** Tamil Bhasha Bodhini-III
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – III	**Malayalam :** Malayalam Bhasha Bodhini-III
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – III	**Marathi :** Marathi Bhasha Bodhini-III

प्रकाशक : दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

केरल, तमिलनाडु और मद्रास शहर प्रचारक ध्यान दें

परीक्षा शुल्क विवरण - अगस्त 2023

परीक्षा का नाम Name of the Exam	परीक्षा शुल्क - चालू प्र.प्र के लिए Exam Fees for Chaalu Pramanith Pracharak Only ₹	परीक्षा शुल्क - प्राइवेट परीक्षार्थी के लिए Exam Fees for Private Candidate ₹
प्राथमिक/Prathamic	220	270
मध्यमा /Madhyama	280	350
राष्ट्रभाषा/Rashtrabhasha	360	450
प्रवेशिका/Praveshika	540	640
विशारद पूर्वार्द्ध/Visharad Poorvardh	550	670
विशारद उत्तरार्द्ध/Visharad Uttarardh	550	670
प्रवीण पूर्वार्द्ध/Praveen Poorvardh	580	720
प्रवीण उत्तरार्द्ध/Praveen Uttarardh	580	720

अगस्त - 2023 (दूसरा सत्र) के लिए आवेदन पत्र के साथ परीक्षा शुल्क
जमा करने की अंतिम तारिख : **15/06/2023**
विलंब शुल्क रु.10/- के साथ : **25/06/2023**

परीक्षा सचिव

आन्ध्र, तेलंगाना और कर्नाटक प्रांत प्रचारक ध्यान दें!

सितम्बर - 2023 (दूसरा सत्र) के लिए आवेदन पत्र के साथ परीक्षा शुल्क
जमा करने की अंतिम तारिख : **15/07/2023**
विलंब शुल्क रु.10/- के साथ : **25/07/2023**

परीक्षा सचिव

चेन्नई महानगर के प्रचारक कृपया ध्यान दें!

परिचय परीक्षा दिनांकः **02.07.2023** (रविवार) को होगी। **- परीक्षा सचिव**

प्रचारक तथा परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए...

परीक्षा प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी तथा अन्य सभी आवश्यक विवरण प्राप्त करने के लिए केंद्र सभा के परीक्षा विभाग का WhatsApp No. 8124333004 उपलब्ध है। **- परीक्षा सचिव**

विद्यार्थी मेला - जुलाई - 2023

अत्यंत हर्ष के साथ सूचित करते हैं कि 'विद्यार्थी मेला' का आयोजन जुलाई 2023 में हो रहा है। यह कार्यक्रम 'Off-line' होगा और केंद्र सभा चेन्नै में संपन्न होगा। विवरण इस प्रकार है -

प्राथमिक, मध्यमा, राष्ट्रभाषा - 16.07.2023(रविवार) प्रवेश शुल्क रु.20/- प्रति छात्र

प्रवेशिका से राष्ट्रभाषा प्रवीण तक -23.07.2023 (रविवार) प्रवेश शुल्क रु.30/- प्रति छात्र

प्राथमिक के लिए - पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक

अन्य परीक्षाओं के लिए - पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक

भोजन अवकाश - मध्याह्न 1.00 से 2.00 बजे तक

सभी प्रचारकों से अनुरोध है कि अपने विद्यार्थियों के साथ आकर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

प्रधान सचिव

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
प्रवेशिका के लिए नया पाठ्यक्रम

प्रचारक बंधुओं को सादर प्रणाम। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहे हैं कि सभा की प्रवेशिका के पाठ्यक्रम के लिए संशोधित एवं परिवर्द्धित पुस्तकें मुद्रित होकर तैयार हो चुकी हैं। पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है :-

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक 1, 2, 3 (व्याख्यानमाला सहित)

इन पुस्तकों को प्रचारक एवं विद्यार्थियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। प्रचारकों से विनम्र निवेदन है कि वे विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

यह भी सूचित करना चाहते हैं कि पुराना पाठ्यक्रम अगस्त 2023 की परीक्षा तक व्यवहार में रहेगा।

इन नए पाठ्य पुस्तकों के अंत में परीक्षा आवेदन पत्र भी होगा। परीक्षा के लिए इसी आवेदन पत्र का प्रयोग करना अनिवार्य है।

- प्रधान सचिव

Printed by G. Selvarajan General Secratary and published by G.Selvarajan on behalf of Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (name of owner) G. Selvarajan and printed at Hindi Prachar Press (place of printing) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017 and published at Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (place of publication) 15-21CThanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017. Editor G.Selvarajan.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास – विदाई समारोह : मई 2023

श्री वी. षण्मुखसुंदरम, व्यवस्थापक, परीक्षा विभाग एवं श्रीमती आर. भारती, ग्रन्थपाल, एन.एच.आर.एल.

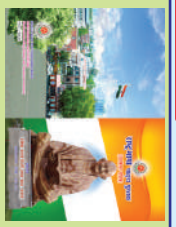

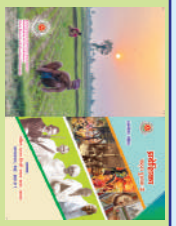

June, 2023. Regd. No. TN/CH(C)/321/2021-2023 **REGISTERED NEWSPAPER**
Licenced to Post without Pre-payment No.TN/PMG(CCR)WPP–432/2021-2023
Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/1957
Date of Publication – First week of every month
Posted at Patrika Channel on Dt.10th June, 2023

Hindi Prachar Samachar

To

If not delivered, please return to:
Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,
15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 की तरफ़ से जी. सेल्वराजन द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित
15-21, तणिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : जी. सेल्वराजन
Published and Printed by G. Selvarajan on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017.
Published and Printed at 15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor G.Selvarajan.